कविता संग्रह

हिंदी गीत विविधा भाग 2



रतनलाल जाट

151.गीत-"ऐसा तेरा नाम"

रतन लाल जाट

कितना गुनगुनाता हूँ मैं नाम तेरा?

अश्रु बन निकलते नदियों की धारा।।

नीले-नीले गगन में चमके नाम तेरा।

जिसको रोशन करे वो सूरज मेरा।।

सदियों ना मिटेगा यह नाम तेरा।

जगमगाता रहेगा दुनिया में हमेशा।।

जिसको सूरज उषाकाल में दिखलाता है।

रजनी में नक्षत्रों के बीच वो टिमटिमाता है।।

मेरे अधर जपते हैं, वो नाम धीरे-धीरे।

सींचते हैं नैन मेरे, दिन-रात अश्रु से।।

मैंने लिखा है नाम, बड़ा ही है दिलदार जो।

चाहे कलेजा जले बने अंगार, फिर भी जपूँ नाम वो।।

पता नहीं है मुझको,

कब भूलूँ मैं नाम वो?

फिर भी ऐसा लगता है,

मानो कि सदियों से दूर हैं हम।

मेरे मन बस गयी है वो मूरत।

जिसका नाम यही है शायद।।

ऐसा तेरा नाम,

करता रहूँगा मैं प्यार।

चाहे मेरे प्राण निकल जायें,

लेकिन भूल ना पाऊँगा मैं।।

152.गीत-"आँखों में है यही वो लड़की"
रतन लाल जाट

आँखों में है यही वो लड़की।

जो सोयी है, बिछा फूल-बिछौना।।

क्या सजा रूप है उसका?

लगती है वो खूबसूरत हसीना।।

इस जहां में ऐसा लगे।

जैसे हम ही यहाँ हैं।।

इसके पहले मिलन अपना,

बरसों का इन्तजार था॥

जो आज हुआ है पूरा।

बाद में वक्त गुजर जायेगा॥

अब क्या हो गया?

अपना प्यार कहीं खो गया।

यही वो लड़की है,

जो मेरी दिवानगी।

ऐसा अपना संग है,

जैसे एक-दूजे साथी॥

ए हमसफर, सुन ओ साथिया।

आ जा यहाँ, देर ना कर साजना॥

हम धीरे-धीरे चलते हुए,

कर रहे हैं इन्तजार ये।

बस, इस प्यार में,

रहते हैं खोये-खोये॥

अब हम दूर हैं।

वो बीते पल कहाँ मिलेंगे?

वो मस्ती, वो बहारें अब ना,

वो नजारा एक पल कहीं दिखता॥

मेरी श्वाँसों का सरगम है यही।

मेरी जिन्दगी का मकसद भी यही॥

यही है प्राणों की वाणी,

जो लगे आँखों को प्यारी।

सुन ले जरा हाल मेरा,

मेरे सपनों की रानी॥

तू दिवानी मेरी है।

मैं दिवाना हूँ तेरा।

हमारा है, जन्मों से,

एक-दूजे से रिश्ता॥

153.गीत-“तेरा-मेरा साथ”

रतन लाल जाट

तेरा-मेरा साथ हैं सदा।

चाहे हम हो जायें जुदा॥

तू मेरी श्वाँसों में,

फिर कैसे हूँ दूर मैं?

तुम मेरे दिल में हो,

मैं तेरे दिल में॥

अँधेरी निशा में, सोया हूँ अकेला।

सपने में आती है, हाल जानने मेरा॥

पल-पल वाणी मेरी,

जपे माला तेरे नाम की।

चाहे कहीं भी रहूँ री,

तुम हो मेरी संगिनी॥

दुनिया से दूर चला मैं जाऊँगा।

फिर भी चाहूँगा मैं तुझे सजना॥

क्या दूर हूँ मैं तुमसे एक भी पल?

तेरा तन और मन, सब हैं मेरे अन्दर॥

दुःख से दूर कहीं जाना,

जनता नहीं है दिल हमारा।

मगर तू ना समझ सके,

कि- हम जुदा होकर भी नहीं जुदा॥

यदि जाऊँगा मैं स्वर्ग

तो करूँगा अल्लाह से पुकार।

मेरी पिया के माफ करो जुर्म,

उसको बुलाओ जल्दी मेरे पास॥

नहीं तो मेरा स्वर्ग बेकार हो जायेगा।

कभी ना दिल उसके बिन जी पायेगा॥

चाहत अटकी है, मेरी वहाँ पर

जहाँ बसी है दिल की धड़कन

तुझे पास बुला लूँ अपने।

या खुद पाश तोड़ आ जाऊँ मैं॥

अब कहो, कैसे मैं हूँ बेगाना।

पल-पल मेरी रगों में तू है ना॥

154.गीत-"हम भी तो ईश्क में जीते हैं।"

रतन लाल जाट

हम भी तो ईश्क में जीते हैं।

फिर ऐसा क्यों होता है प्यार में?

कुछ करना होगा मेरे दिलबार

विरह आग दिल में जलाये रखा।

हँसी-मस्ती के सुखद सपनों में,

अपने प्रियतम का नाम जपना है।

चलकर काँटों की डगर में,

फूल चुन-चुनकर लाना है।।

इतना ही ना करना तुम,

और भी करना है कुछ अर्पण।

मधुरवाणी से तुम्हें,

अपनों का दिल जीतना है।

चाँद-सितारों की जगमग के बीच

टकटकी लगाये राह देखना मेरे मीत।

टपकते ओस की बुन्दों को

अश्रु से मिलाकर बरसात करना वो।।

इतना सबकुछ करना होगा,

फिर अपने प्रियतम की चाहत करना।

155.गीत-"प्यार में सब भूला हूँ।"
रतन लाल जाट

प्यार में सब भूला हूँ, अपनी राह भी डूला हूँ।

अब चाहे कितना सोचूँ? लेकिन कुछ ना कर पाऊँ।।

ना जाने क्या हो गया है इस प्यार में?

पागल-सा हाल मेरा क्यों हो गया है?

ना सुध है अब मुझको अपनी।

बस, दिन-रात चिन्ता है तेरी।।

एक तुझको ही मैं,

अपना सबकुछ मान बैठा हूँ।

तू एक रूठी रानी है,

मैं तेरे प्यार को तरसता हूँ।।

यदि एकपल भी हम मिल जायें,

इस प्यार के दरिया में।

तो समझो कि- धन्य हो गया मैं,

और मेरा जीवन सफल हो गया है॥

तब मैं ये दुनिया छोड़ दूँ।

दिवानी के संग उड़ान भरूँ॥

156.गीत-"रोयें कितना,थामें कौन?
रतन लाल जाट

रोयें कितना,थामें कौन?

सुनने वाला, मुख मोड़॥

हमसे जूदा, हम दूर।

ऐसी राह जिसका, कोई ना छोर॥

प्यार की गली मे मंजिल हैं कहाँ?

चलता रहे हरदम वो दिवाना।

जिन्दगी ना थमती है,

मौत है सँग उसके।

अकेले ना रूके जीवन,

कभी तो हो अपना मिलन।

रहती ना खबर,

उसका है गम।

तुम बिन हैं अकेले,

ऐसे ही चले जायेगे।

दुनिया में, ऐसी निशानी हम।

छोड़ देंगे, प्यार की एकदिन॥

सबको आयेगा याद,

सच्चे प्यार का नाम।

157.गीत-"ईश्क ने की है हमारी हालत कुछ ऐसी"

रतन लाल जाट

ईश्क ने की है हमारी, हालत कुछ ऐसी।

कि-बदलती है धरती, बदलता है मौसम कभी।।

लेकिन सावन-भादों या मधुमास कभी।

आते नहीं हैं एकबार भी होली-दिवाली।।

गीत है उसके प्यार का,

अपनी जुबां पे पक्का।

दिन-रात हम, गुनगुनाते है यही।।

आज पल-पल रंग बदले सजनी।

लेकिन हमें ना कोई गम, ना है खुशी।।

चाहे हरपल जिन्दगी अपनी,

खड़ी है तेरे द्वार सजनी।।

कहीं अकेले पुकार करे श्वासें,

छिपकर तुमको हररोज है।

सँजोती है सपने आँखें,

प्यार में सिर्फ तुम्हारे।।

करते हैं हम बातें,

धीरे-धीरे होंठ हिलते।

धड़कन है पहचान ली।

इसके सिवा कुछ जाने नहीं।।

कैसे हूँ मैं जूदा, तुम बिन हाल यहाँ।

एकपल भी लगता मुश्किल में कटता।।

लेकिन अब धीरे-धीरे बदलेगा।

यह वक्त भी गुजर जायेगा।।

केवल हम नाम जपते हैं,

साथ ही आँखें बन्दकरके।।

दिल की बात कहते हैं तभी,

सपना रात में देखते हैं सभी॥

फूल ना देखा,

फिर खुशबू कैसे?

प्यार करना,

यादकर रोते॥

लेकिन कभी ना देना।

सजा इतनी ओ सजना॥

रंग बनके, दिल को भर दे।

प्यार ये, दिवाना सबको कर दे॥

जब आ जाये मौसम रंगीं।

दिल झूम उठे चढ़ जाये नशा भी॥

चैन ना तुम बिन,

मौत ना एकपल।

और मिलना है मुश्किल,

जीना भी नामुमकिन॥

कैसे बनेगा संग, जोड़ी जो टूट गयी।

हो गये जूदा, पर एकदिन मिलेंगे ही?

158.गीत-"दिवाना कहेगा"

रतन लाल जाट

दिवाना कहेगा, रे मेरी दिवानी कहाँ?

दिवानी कहेगी, रे मेरा आशिक कहाँ?

यहाँ-वहाँ होगा मेरे आसपास।

छिपा होगा मेरे अन्तस में आज॥

कहाँ खोजूँ मैं उसको?

जो मेरे सीने में बस गया॥

आ जा रे तू आ जा,

तुझको यह दिल बुलाता।

तड़पता है रे तड़पता,

बस, यह दिल तेरे बिना।।

सीने में जलती है आग।

श्वाँसों में है तेरा ही नाम।।

तुमसे बोलूँगी मैं,

मौन क्यों हो तुम मुझसे?

आकर मुझसे मिलना होगा।

गोद में भरकर झूम उठूंगा।।

मिलन से एक हमको होना।

एक हो जाये दिल अपना।।

159.गीत-"कभी दिल धड़के"

रतन लाल जाट

कभी दिल धड़के, कभी दिल झूमे।

कभी नाचे वो, कभी वो गाये।।

इस दिल की बात कोई ना जाने।

दुनिया सारी कोशिश कर हार जाये।।

यह एक ऐसी कहानी,

जिसका कोई नाम नहीं।

दिल की बात दिल समझे,

बिन भाषा के जान जाये।

इस दिल के पीछे चलती है दुनिया।

दुनिया नरक-सी लगे दिल के बिना।।

दुनिया एकदिन मिट जानी है।

बात एकरोज फिक्की पड़ जानी है।।

लेकिन दिल का राज अमर है।

युगों-युगों से नाम उसका है।।

160.गीत-"दुनिया ने कहा था"
रतन लाल जाट

दुनिया ने कहा था,

छिपकर मुझको।

ईशारों से बताया,

अपनी दिवानी देखो।।

सुन, वो हजारों की रानी।

ऐसी है तेरी दिवानी।।

जो धोखे की लड़ियों से सजी।

वो बाहरी दुनिया में है डूबी।।

क्या है तेरा रिश्ता?

यह है हमारी बगिया।

हम ही रहेंगे यहाँ।।

और काम कई करेंगे देखना

कलियों से मकरन्द पी जायेंगे।

क्या है हमको लेना-देना,

जो रस भरने का इन्तजार करेंगे।।

हम चाहते हैं जल्दी से,

इस नशे में डूबना।

अब और हमसे,

मुश्किल एक पल रूकना।।

माता हो या बहिनां,

कोई ना बच पायेगा।

ना होश है हमको, क्या करना?

ना ही गम है, जो हमने किया॥

क्या है आजकल के वादे?

जो कभी निभाये नहीं जाते।

ऐसी तेरी यादें,

जो बरसों भी ना सताये॥

ऐसे हम दिवाने,

आज उसे काट खायेंगे।

क्या है तमीज नाम तुम्हारा।

वो इन्सानों की चीज नहीं यहाँ॥

161.गीत-"मेरी मैया तुझको नमन है।"
रतन लाल जाट

मेरी मैया तुझको नमन है,

पाया है जन्म तेरी कोख से।

खेले हैं हम तेरी गोद में,

आँचल में सदा ही सोये रहे॥

मेरी मैया तुझको नमन है..................

दूध तुम्हारा पीया है,

जो अमृत जैसा मीठा है।

सीस झुकाये, आशीष पाते हैं।

श्रद्धा से चरण, तुम्हारे छूते हैं॥

मेरी मैया तुझको नमन है..................

मैया मेरी, लाल तेरा वो।

कुर्बान है, जो सदा तुझको।

करता है नमन,

मैया मेरी, खेलू मैं

तेरी आँचल में,

सोया रहूँ हरपल मैं॥

मेरी मैया तुझको नमन है………………

तू स्नेह का सागर है,

करूणा की तस्वीर है।

जग में बढ़कर तू,

मेरी जन्म दायिनी है॥

मेरी मैया तुझको नमन है……………….

दूध पिलाकर, अच्छा खिलाकर

हमको बड़ा किया है।

अच्छे पहनाये हैं,

कपड़े-लते हमको तूने॥

मेरी मैया तुझको नमन है……………….

तेरा कर्ज, कभी ना चुका पायेंगे।

खून देकर भी, दूध का मोल ना कर पायेंगे॥

सीस अपना, तुझको कुर्बान कर देंगे।

जीवन की सारी खुशियाँ,

हम तेरी गोदी में लायेंगे।

दु:ख-गम सारे हम,

तेरी गोदी में आ भूल जायेंगे॥

मेरी मैया तुझको नमन है……………….

162.गीत-"मैं आया था कहीं से"

रतन लाल जाट

मैं आया था कहीं से,

जहाँ तुम थी पहले से।

'क्या कहना है मुझको?

क्यों मेरे पीछे पड़ते हो?'

तुम कुछ भी कहो,

मैं ना भूलूँगा तुमको।

'तू कितना पागल है?

जो दौड़ा आया पीछे।।'

नहीं यह भूल होगी तुम्हारी।

मैं नहीं तू है मेरी दिवानी।।

'क्या पता, जो भी हुआ।

मानो वो अच्छा ही हुआ।।

हम दोनों आ मिले, आज यहाँ।

अब हमको नहीं कभी बिछुड़ना।।'

सदियों ना टूटे ये जोड़ी।

चलती है संग सदा ही।।

हँसना-गाना, नाचना-झूमना।

कहीं उलझन बन जाये ना।।

'तू मेरे दिल का दिवाना।

और मैं तेरी दिवानी बाला।।'

मैं आया तेरे साथ।

तू मेरे आगे-पीछे आज॥

‘इस बहार में, हम दोनों ही हैं।

साथ अपना सच्चा प्यार है॥’

जो कभी ना टूटेगा।

और कभी ना छूटेगा॥

‘तेरा खुमार मन में,

आँधी बनकर आया।

मैं दौड़ी-दौड़ी कब-से,

करूँ इन्तजार तेरा॥’

163.गीत-“आ मेरी दिवानी”

रतन लाल जाट

आ मेरी दिवानी,

तू कहीं दूर ना जा।

हमको ना भूलना कभी,

प्यार अपना याद रखना॥

यदि याद ना कर सकोगी तुम।

तो आँखों में रहेंगे सदा ही हम॥

कभी ना हमको तू भूल।

हम तेरे दिल के हैं फूल॥

यदि तोड़के हमको,

कभी मुरझाओगी ना।

तब हमारी खुशबू,

महकेगी तेरे तन में सदा॥

यदि तुम जाओगी,

इस दिल से दूर कभी।

तो पीछा करके तेरी,

नींद उड़ायेंगे सपने में भी।

फिर क्या तुम करोगी?

ले-लेकर करवटें।।

सारी रात गुजर जायेगी

बस, रोने-धोने में।।

यदि उसको याद ना कर सकोगी।

तो आँखों में सूरत वो बस जायेगी।।

यदि नफरत तुम करोगी ना।

तो तुमको भी जलना होगा।।

यदि दिल किसी का तोड़ोगी,

तो तड़प ही जीवन में मिलेगी।

तब कौन दिवाना जो?

दिल से प्यार करेगा।

पहले नजरें मिलायी है।

अब प्यार नहीं हो कैसे?

सबकुछ बदल जायेगा।

मगर वो दिवाना,

दिल से तेरे

एकपल भी दूर ना जायेगा।।

जलेगी काया, मन भी तड़पेगा।

तब कोई ना पूछेगा हाल तेरा।।

दिल चाहेगा उसको बुलाना।

बाँहें में उसके चाहोगी लिपटना।।

नयनों से आँसू ढुलकेंगे

धीरे-से आँसू पोंछने कौन आयेगा?

164.गीत-"आपसे मिलकर"

रतन लाल जाट

आपसे मिलकर, कितना चैन मिला?

कभी भी मैंने, ऐसा ना सोचा था।

मगर अब दिल मेरा, दिन-रात तुझको चाहता।।

कई दिनों तक थी बेचैन मैं।

अब आकर जगाया है तुमने।।

धीरे-धीरे पास आ

होंठ मेरे चूम करके।।

तेरी याद में रोना,

रोते-रोते रात निकलना।

श्वाँसों से नाम जपना,

फिर मुश्किल होगा मिलना।।

दिल की धड़कन बढ़ गई हैं।

जब देखा कि- प्यार हो गया है।।

फिर खोये-खोये सपने में,

हम तेरी सूरत देखते हैं।

फिर बेचैन होकर मेरे दिल ने।

मिलने की कोशिश की तुमसे।।

कितने प्यारे फूल खिले?

महकी पवन भी लगी चलने।

कैसे अनजान हम थे यहाँ?

कहीं तुम नाराज हो ना जाना।

हमने छिपकर तुमको देखा था।।

अब क्या करें? सपने में आके।

मेरी प्यास और भी बढ़ गयी है।।

ना रोक सकता हूँ खुद को।

आ गया हूँ अब मिलने को।।

बीती बातें और भूलाकर मुलाकतें।

धीरे-धीरे आँखों में प्यार बसाके।।

अब तुम ना मिलो,

मिलने को मैं आया।

चलते-चलते रस्ते में,

और तेज चलने लगा।।

नहीं रोक सके अपने को।

बिन चाहे प्यार खींचे वो।।

पास आकर तेरे,

कदम रूक गये मेरे।

और फैलायी नजर मैंने,

तेरे आसपास धीरे-से।।

खिलता कमल, बहता पानी।

हरे-भरे पेड़ों से हवाएँ आती।।

फूलों की कलियों पे,

मँडराये पागल भँवरे।

हम देखते रहें,

एक-दूजे की राहें।।

तब सोचा था हमने,

दिल की आग क्यों ना जले?

और मन भी

थोड़ा-सा चैन है।।

ऐसा लगा कि- प्यार हमारा।

जिन्दा हो गया है आज दुबारा।।

आपसे मिलकर, अम्बर में बादल छाये।

घनी धूप की जगह छाया ही छाया है।।

नजर मिली दिल में प्यार जगा।

लगें हम नाचने गोद में उठा।।

मिलकर हम दुनिया के गम सारे।

एकपल में ही भूल गये।।

बातें करें और हँसे,

कितना प्यार करते हैं?

अब ना कोई है तमन्ना,

जिन्दगी मेरी तुझमें बसाया।।

165.गीत-"अब कुछ हो नहीं सकता।"
रतन लाल जाट

अब कुछ हो नहीं सकता।

प्यार मैं किसी से और से करता।।

जिसनें भी हमको अपना कहा।

हमने भी उसको दिल दे दिया।।

हमने वादा किया है।

तो उसे निभायेंगे।।

मेरे मन में किसी खास के प्रति

प्यार हैं नहीं एक रतिभर कभी।

तुम-सा सुन्दर ना कोई है।

जिसके पास जा प्यार करूँ मैं।।

अंग-अंग से तुझको पहचाना,

दुनिया अपनी हमने माना।

तेरी ही यादें आती,

और कोई भाये ना॥

जीवन हमने सारा,

तेरे कदमों में झुकाया।

सच्चा प्यार भी दुनिया में,

हमको सीखाया है तुमने॥

कोरे दिल के कागज पे,

नाम तेरा ही लिखा है।

मन में जगा है प्यार,

इसीलिए किया तुमको याद॥

अब कभी अपने प्यार से दूर ना रहना।

कुछ भी हो लेकिन दिल नहीं तोड़ना॥

166.गीत-"याद तेरी आती है।"

रतन लाल जाट

याद तेरी आती है,

जो मुझको रूलाती है।

अंग-अंग मेरे,

आग वो जलाती है॥

सपने में देखते ही तुझे

आँख मेरी खुल जाती है।

एक पल भी फिर

नींद नहीं आती है॥

सोते हुए या जगने पर भी।

अकेले रहते हैं, चाहे संग हो सभी॥

आँचल उड़े, हवा आये।

हम दौड़ें, संग तेरे आये॥

तेरी यादों में जिन्दगी हमने गँवा दी।

अब तक है कहाँ? जो तू छिप बैठी॥

रोते-रोते आँचल भीग गया।

इस जुदाई में दिल टूट गया॥

मन में बसाया,

तन से लगाया।

बातें कही हमने,

देखो, कान में तेरे।

167.गीत-"यदि वो ना होती"
रतन लाल जाट

यदि वो ना होती,

तो कौन उठाता?

कागज कोरा इस दिल का।

आँचल में अपने छुपाता॥

यदि वो ना मिलती,

तो प्यार किससे करते?

दिल अपना कौन चुराता?

किसकी यादें हम सँजोते?

प्यारी-प्यारी आँखें

और झिलमिलाता चेहरा।

जो दिन-रात हमें

पल-पल बेचैन करता॥

यदि जिन्दगी में वो ना आती, तो हाल बुरा होता।

बेगानी-सी लगाती हमको, बिन उसके सारी दुनिया॥

हम चाहत में किसके पीछे दौड़ते?

और कौन रूलाता दिल तड़पाके?

ना कोई इजहार करता, ना कोई लड़ता॥

ऐसा कोई भी ना होता,

शायद दुनिया में उस जैसा।

कहाँ वो होती? कैसे मैं मिलता।

कौन दिल की बातें सुनता?

आँखों में तस्वीर किसकी होती?

जीना अपना मुश्किल हो जाता,

उस बिन अधूरी जिन्दगी लगती॥

रह जाता दिल मोहब्बत का प्यासा।

168.गीत-"सुर मिलायें हम"
रतन लाल जाट

सुर मिलायें हम,

तेरे-मेरे संग।

श्वाँसों से निकले,

मधुर गूँजन॥

पलभर तुमको देखकर

मन में शीतलता छायी।

ठण्डक बड़ी प्यारी मुझको

तेरे संग खूब भायी॥

जीवन की खुशियाँ तेरे संग

मुश्किल में हूँ साथिया तेरे बिन

जग भी सीखे, हमसे अब।

जलती आग हो जाये शीतल॥

लेते हैं तेरा नाम,

करते हैं खुला ऐलान।

मरते हैं एक साथ,

फिर क्यों तू हैरान?

जीवन का गान है तू,

धरती पर स्वर्ग लाये।

हिम्मत हारे फिर क्यूँ,

प्रेम में बड़ी ताकत है।।

दिल से निकले हरदम,

प्यार में मरने की चाहत।।

169.गीत-"सुन ले तू"
रतन लाल जाट

सुन ले तू, बात यह मेरी।

कैसे हुई है अपनी दोस्ती?

जीवन में सबको भूलाके

बस, याद किया तुमको ही।।

अपनी हँसी खोकर,

हँसी तेरी खोजा करते।

रोते हैं रात भर,

मगर नींद तुम्हारी ना उड़े।।

मुस्कान तेरे चेहरे की।

गम मेरे भूला देती।।

सब हमको पराये लगते।

तुझमें ही एक दुनिया देखते।।

आँखें दूर-दूर तक,

नजरें फैलाये।

तुझको ही देखें,

कभी ना थके।

झपकती है नहीं।

लगाये हैं टकटकी।।

कच्चा अपना जीवन,

सच्चा तेरा प्यार है।

छोटी-छोटी ये बातें,

बहुत प्यारी लगती है।।

सपने हमारे।

किये जो वादे।।

एक-दूसरे ने साथ कभी।

वो रह जाये अधूरे नहीं।।

दोस्ती में काँटों पर चलें।

फूल चुन-चुनकर हम लायें।।

हरपल दुख उठाते हैं।

तुझे हँसाने की चाहत में।।

अंगार बनकर दिल जलता है,

खुशबू तुझमें नजर आती।

जलना है खूब जलाये,

महक उड़ पाये नहीं।।

170.गीत-"ये गाँव, ये गलियाँ"

रतन लाल जाट

ये गाँव, ये गलियाँ।

सबकुछ बदल गया।।

नयी सड़क और रस्ता।

झोंपड़ी की जगह मकान नया।।

खेल बच्चों के,

अब हैं कहाँ?

दुल्हन के रंग-बिरंगे कपड़े

और लाख की चूड़ियाँ।।

ये गाँव, ये गलियाँ……………………….

छोटे से बड़े हम हो गये।

नया था वो आज लगता है पुराना।।

लेकिन यादें वो अभी जिन्दा है।

जो कभी मिटाये मिटती है ना।।

ये गाँव, ये गलियाँ……………………

जब मैं छोटा था,

ननिहाल मिलने आया।

बच्चों संग खूब खेला,

और मामा को कहा काका।।

ये गाँव, ये गलियाँ……………………

आज वो पेड़ सूख गया है।

मौसम भी अब नहीं है प्यारा।।

जब हम खाते थे, आम पक्के।

और दूध मलाई खूब यहाँ।।

ये गाँव, ये गलियाँ……………………

171.गीत-"आयी है होली"

रतन लाल जाट

आयी है होली,आयी रे होली।

देखो, मस्ती की रंग-बिरंगी बहार

अरे, मैं तो खेलूँगा धुलण्डी आज।

अपनी प्रेम-दिवानी साथ,

और मेरे अपने यार॥

उड़ते हैं रंग-गुलाल।

मौसम है ऋतुराज॥

फिर कैसे रूक सकती है वो?

दिल उसका भी मचलता है।

संग मेरे आ करके वो,

होली खेले, रे होली॥

आज दुनिया है, होली की उमंग में।

दौड़ी-रूकी, भागी-थमी, सोयी-जागी है॥

हाथों में पिचकारी, सात रंग से भरी।

दौड़ते हैं हम, ढुलकाते रंगीन-मस्ती की गगरी॥

तुम खींचो मुझको अपने पास।

मैं दौड़ा तुझको भीगोने आज॥

अब कोई ना बच पायेगा।

मस्ती की इस बहार में,

चाहे बच्चा हो या हो कोई बुढ़ा॥

निराला है हम जवाँ का मजा ही।

बड़ा ही, मन को भाये, दे खूमारी॥

आओ रे, देखो आज,

उड़ते ये रंगों के बादल।

हो रही है बरसात,

रंगीन मस्ती के संग॥

रंगो से सजा है हर चेहरा।

ढूलकता है प्रेम-रस टपकता॥

आके दौड़ा मैं, अब आ दौड़ा।

उड़ेल दूँगा सबपे, रंगों की घटा।।

संग प्रेम-दिवानी को भी।

ये मस्ती ना भूलेंगे कभी।।

आज हुए जूदा हम साथी।

याद करेंगे सदा ये खुशी।।

जब खेलेंगे होली, भीगे-भीगे।

तो लगेंगे बसन्त के दिवाने।।

हमारे बीच लड़ी प्यार की।

देखो, आज उलझ गई।।

बँधकर हम इस बंधन में

किसी ओर के हो गये।

जब चाहे, वो हमको आके

नचायें-हँसाये इस बहार में।।

हँसेंगे आज जी भरके।

गायेंगे झूम-झूमके।।

मस्ती की हैं बहारें।

प्रेम की भी बौछारें।।

तीज-त्योहार है कहीं।

तो कहीं धूम मेलों की।।

172.गीत-"अपना गाँव"

रतन लाल जाट

अपना-अपना गाँव सबको प्यारा है ।

जिसकी कीमत खून से भी महँगी है।।

स्वर्ग से भी अच्छा यहाँ कितना नजारा है?

ये अपना घर-बार जैसे एक गुलिस्तां है।।

इधर-उधर की कूँज-गलियों में।

मौज-मस्ती से दौड़ा करता था मैं।।

मेरे गाँव के रहने वाले,

बड़े ही अच्छे-प्यारे लोग हैं।

मस्ती से गुजरती जिन्दगी ये,

सबके दिलों को भाती है।।

मेरे गाँव के खेत-खलिहानों से।

आती खुशबू भीनी-भीनी लुभाती है।।

बहते हैं नदी-नाले,

करते यहाँ हंस विहार।

खिलते कमल, नीला पानी,

तल में छिपे मोती हजार।।

देखते अपना गाँव रहें।

जब तक हमारी जान हैं।।

अपना मन लगता है जहाँ।

घर-परिवार साथ हैं वहाँ।।

फिर न जाने कहाँ मिलेंगे?

स्वर्ग से भी सुन्दर नजारे।।

इस मिट्टी की धूल में,

चन्दन-केशर की सुगन्ध है।

हमारी रग-रग में पानी ये,

खून बनकर बहता है।।

ऐसा अपना जान-से प्यारा गाँव है।

हमेशा आबाद रहे इतनी ही आरजू है।।

लुटा दें जहाँ तन भी अपना।

मन भी बसा है नित वहाँ।।

श्वाँसें भी थम जाये हमारी।

चाहे आज ही खत्म हो कहानी॥

जब-जब मिलेगा जन्म हमको नया है।

फिर लौट आयेंगे अपने इस गाँव में॥

173.गीत-"मुझे कुछ करना है"

रतन लाल जाट

मुझे कुछ करना है।

संग तेरे ही जीना है॥

फिरता हूँ हरकहीँ मैं।

तेरी एक निशानी लिए॥

अपना साथ ना छुटे।

चाहे दुनिया आज मिटे॥

लेकिन हम कभी दूर ना जायें।

भले ही सबकुछ सहना पड़े॥

अपना सबकुछ तुझ पर फिदा है।

तेरी हर मुश्किल से मुझे लड़ना है॥

सुख-दुःख का है जीवन में जोड़ा।

कभी हम हँसते हैं, तो कभी है रोना॥

अपने जीवन का उजियारा।

कर दे तेरे जीवन को हरा-भरा॥

आने वाली आँधी को जवाब दूँगा मैं।

तूफाँ में भी अपना रस्ता खोज लूँगा मैं॥

174.गीत-"अँखियाँ मेरी"

रतन लाल जाट

अँखियाँ मेरी, यहीं-कहीं।

हरपल तुमको ही खोजती॥

बिन तुमसे मिले,

चैन ना आये।

बस, तुमसे ही है,

सुख वो सारे॥

लगता है मुझको हरकहीं।

तेरा नाम है लिखा हुआ यहीं॥

जहाँ तू ना है,

वहाँ तेरी परछाई।

चाहे जहाँ रहूँ मैं,

पर दिल है तू छाई।

मेरी हर श्वाँस जपती है माला॥

बस, दिन-रात तेरे नाम की सदा॥

मेरा हरख्वाब है तू ही,

और हो मेरा सपना भी।

175.गीत-"अपने दिल में"

रतन लाल जाट

अपने दिल में छुपा लो।

मुझको श्वाँसों में बसा लो॥

नैनों से कहीं ना खो जाने दो।

सारी जिन्दगी संग तेरे जीने दो॥

ये प्यारी-प्यारी,

है दुनिया अपनी।

और तू मंजिल मेरी,

पाना मुश्किल बड़ा ही॥

लेकिन दुनिया छोड़ पायेंगे तुमको॥

तेरे सिवा नहीं देख पायेंगे किसी को॥

संग तेरे ही खुशी है,

मेरे इस जीवन की।

हँसते-हँसते लुटा दूँ,

मैं जान भी अपनी॥

छोड़ कहीं ना जाऊँगा।

सबको कह दूँगा विदा॥

कि- जाता हूँ मैं तो,

जहाँ मेरा प्यार है वो।

176.गीत-"बैठी-बैठी मैं अकेली"

रतन लाल जाट

बैठी-बैठी मैं अकेली,

टकटकी लगाये निहारती।

यही है वो राह,

मेरे प्रियतम के आने की॥

नयनों से ढूलक गये हैं,

ये अश्रु बनके मोती मेरे।

बस, तेरे ही तेरे इन्तजार में॥

आँखें हरपल निहारे।

कहीं वो आ चला ना जाये॥

सदा चलना है मुझे,

संग उसके ही।

सपनों में देखा था,

यादों ने कुछ बताया।

लम्बी जुदाई है,

तेरे-मेरे प्यार की।

बन गई है,

वो आज एक कहानी॥

177.गीत-"तेरे बिना"
रतन लाल जाट

नयी सुबह की फैली धूप में,

सूरज की सुन्दर-सुन्दर किरणें।

लगती है मुझको तेरे बिना ये,

खोयी-खोयी-सी बेगानी रे॥

खड़े-खड़े देखता हूँ,

तेरे बिना मैं अकेला हूँ।

बिन पिया के जीना ये,

मुझको बेरंग लगता है॥

योंहि छिप-छिपकर

बीताता हूँ मैं हरपल।

आने वाले अपने मिलन में,

बस, तेरी एक चाहत है॥

पल-पल करके दिन बीत जाये।

जल्दी से ये साँझ ढ़ल आये॥

तब जाकर हम मिल पायेंगे।

दूर से ही एक-दूजे को देखके

कभी फूले नहीं समायेंगे॥

सदियों की खुशियाँ लौट आयेगी,

जब साथ मेरे वो दिल के रहेगी।

बिछड़ते ही हाल मेरा,

हो जायेगा बहुत बुरा।

पिया! ऐसा क्या तुमने?

जादू मुझ पर चलाया है।।

अब मैं जड़ भी नहीं हूँ,

और चेतन भी नहीं हूँ।

बस, रातभर काँपता हूँ,

जी चाहे, फिर भी रो ना सकूँ।।

आँखें भी झरना बनकर बहती है।

श्वाँसें भी ना जाने क्यों तेज चलती है?

अब इस निशा में टिमटिमाते हैं

नभ के सितारे।

अकेला ही देखता रहता हूँ मैं,

रातभर बिना तुम्हारे।।

कहाँ तू है? और कहाँ मैं?

तेरा विरह जले, क्यों मेरे दिल में?

ना जाने क्यों इस चाँदनी रात में?

कैसे हम जूदा हुए मिलन की बेला में?

तेरे बिना स्वर्ग भी बेगाना-सा लगे।

चाँदनी रात भी मुझको घोर निशा लगे।।

बरसता मधु भी जहर हो जैसे।

बसंत भी यहाँ पतझड़ बना है।।

महके-महके फूलों की,

हरी-भरी हैं क्यारी।

फिर भी लगती है,

तेरे बिना सुनी-सुनी॥

रंग-बिरंगे फूल ये,

लगते हैं अंगार जैसे।

अब तक बेकार है,

ना जाने क्यों ऐसा है?

178.गीत-"पहले-पहले प्यार में"

रतन लाल जाट

पहले-पहले प्यार में, हम मिले थे।

एक सरवर के किनारे, चुपके से॥

खड़े थे हम उस बरगद की छाया में।

और देख रहे थे एक-दूसरे को खोये॥

टपक रहा था प्रेम-अमृत भरा एक घड़ा।

वो मानो आज ही देख हमको फूट पड़ा॥

शरमाये थे हम, मुस्कुराये भी हम।

धीरे-धीरे हमने, बोले थे मधुर-वचन॥

उसने कहा था होले-से।

जो मैंने सुना था धीरे-से॥

क्या कहा था? क्या बतलायें?

जान गये हम कि- मिलन हुआ है॥

अब ना टूटेगा ये बंधन अपना।

रखेंगे साज-संवारकर ये रिश्ता॥

प्यार में होता है आजकल,

कुछ ऐसा ही अजब-गजब।

क्या मिला था? क्या छुटा है?

क्या पाया और क्या खोया है?

अब तक बेगाने थे हम।

मिलन से बन गये दिवाने हम।।

प्यार के दिवाने, अब क्या बोलें?

179.गीत-"अकेला मैं अकेला"
रतन लाल जाट

अकेला मैं अकेला, चल तू चल अकेला।

ना दुनिया में, कुछ भी हैं अपना।।

फिर क्यों मानता है तू? हर किसी को अपना।

अकेला मैं अकेला, चल तू चल अकेला।

साथ किसी का कब हमको मिला?

आखिर हमने ऐसा क्यों मान लिया?

एक दिन जाना है, सबसे ही जुदा हमको होना।

तो फिर किसका संग? किस पर करूँ मैं भरोसा?

चलते-चलते तुझको मंजिल से रोकेंगे वो।

चलती राह में, ये अपने ही काँटे बिछायेंगे जो।।

देख कर्म उनका हिम्मत तू ना हारना।

डटा रहे तो निश्चय ही मंजिल पा जायेगा।।

180.गीत-"सबको हँसाओ"
रतन लाल जाट

अपनी हँसी-खुशी से, सबको हँसाओ।

प्यार अपना ये सभी पर लुटाओ।।

फिर जीवन में कहाँ ये लम्हें?

इस दुनिया में हमको मिलेंगे।।

कितनी सुन्दर-सुन्दर, खिली है कलियाँ।

गुनगुनाते इन आशिक भँवरों को बुलाया।।

बुंद-बुंद से रस अपना फूलों में भर दो।

बस, प्यार हमें जी भर तुम्हीं से करने दो।।

बिन प्यार के जीवन में स्वाद क्या है?

बिन हँसी-खुशी के सारा जहाँ भी रोता है।।

आकर इन मुझको, प्यारे तुम चुम लो।

दिल से दिल मिला, तुम आलिंग्न कर लो।।

181.गीत-"रहो सब मिलजुलकर"
रतन लाल जाट

रहो सब मिलजुलकर,

आपस में सब भाई बनकर।

एक प्रभु के प्यारे हैं हम,

तो रहना है पुत्र उसके बन।।

क्यों रखते हो? आपस में इतना,

बैर-भाव तुम व्यर्थ में भला।

तो फिर त्याग दो,

बंधन जो है झूठा।।

जो जग में रहने वालों को,

करता है दूर-दूर

एक-सा तन है, मन भी एक।

एक प्रभु, तो फिर हम क्यों अनेक?

एक दिल है, एक ही आत्मा।

खुन एक है तो रखो एकता।।

जात-पात है क्या?

जो बढ़ाती है दूरियाँ।

हम ऐसा पाठ पढ़ें,

जो सीखाये रहना परस्पर

हर इन्सान में रूप दिखेगा।

उस असीम शक्ति का।।

पूज्य है वो पावन है।

जग में प्यारी वो शक्ति है।।

सच्चे मन से करो ना,

उस इष्ट का स्मरण

182.गीत-"मैं आ गया"
रतन लाल जाट

आ गया, मैं आ गया।

चलते-चलते मंजिल पा गया।।

बिन तेरे अकेले ही,

आ गया, मैं आ गया।

जब आकर मैंने देखा,

बिन तेरे हाल अपना।।

तो खड़े-खड़े मैंने रूककर,

टकटकी लगा निहारा रास्ता।

फिर कहा मैंने तुझे पुकारकर,

आ जा तू मैं इंतजार कर रहा।।

खड़ा हूँ आगे मैं करूँ तेरा इन्तजार।

जरा दूर से ही फैलाओ तुम अपने हाथ।

तब मैं थामकर आँचल तेरा पास खींच लूँगा।।

सारा संसार हम छोड़ जायेंगे।

हँसते-हँसते जहाँ इन्तजार है।।

बिन तेरे एकपल भी,

ना ठहर सकता हूँ मैं।।

हरपल काँटों-भरी डगर में,

बनायी फूलों की माला तेरी।

अब चलना है साथ हमको,

एक-दूजे से कभी जुदा ना हों।

घुलमिल जायेंगे हम आकर यहाँ।

और अपने सारे गम देंगे भूला।।

दिल दिया है मैंने, बस तुझको ही सजना।

जीना है अब हमको जिन्दगी कभी दूर ना।।

183.गीत-"हरपल मैं तुझको ही निहारूँ"
रतन लाल जाट

हरपल मैं तुझको ही निहारूँ।

पलभर भी कहीं दूर ना जाऊँ।।

अरे, कोई तो मिला दो।

अपनी पिया से मुझको।।

ए हवा! जरा तुम आओ ना।

धीरे-से उसको बात मेरी कहना।।

जिन्दगी में बस एकबार।

मिला दो मुझको अपना प्यारा।।

यहाँ कुछ ऐसा है हाल।

नहीं कोई तुम बिन है यारा।।

कहनी है हमको बहुत-सी बातें।

मगर कैसे कहें अरमान दिल के।।

हरपल मैं तुझको ही बसाऊँ।

सबकुछ अपना आज ही छोड़ दूँ।।

पलभर को चैन ना आये क्यूँ?

तड़पकर अकेले रह ना जायें यूँ।।

सपनों में वो आये।

नींद मेरी उड़ाये।

लगता है मुझको,

चाँद भी थक गया।

तुम बिन सितारों ने,

जगमगाना बन्द कर दिया।।

अरे, कोई तो मिला दो।

अपने पिया से मुझको।।

हरपल एक-दूजे के संग, मिल करके अब हम।

लिखेंगे एक प्रेम-कहानी, जो कभी हुई हो सच।।

बस, अब कह दो मैं आ जाऊँ।

अब दूर रहना मुश्किल है क्या कहूँ?

184.गीत-"धड़कन मेरी बढ़ गई है"
रतन लाल जाट

धड़कन मेरी बढ़ गई है।

नाम तेरा सुनते ही होश उड़ गये हैं।।

चाल मेरी अंगड़ाई है।

दिल भी थोड़ा बेचैन है।।

छायी है खुशी, तुमसे मिलने की।

उसको देखकर आयी मन में भी स्फूर्ति।।

धड़कन मेरी बढ़ गई है....................।।

अब यह धड़कन रूकती है नहीं।

मेरी बोलती भी उसके आगे थम गयी॥

धड़कन मेरी बढ़ गई है...................॥

जैसे दिल में वो आकर बस गयी है।

और जलती आग-सी बन भड़कती है॥

धड़कन मेरी बढ़ गई है...................॥

आँखों में वो रूप अपना दिखलाये।

लगता है अब निकट अंत मेरा है॥

धड़कन मेरी बढ़ गई है...................॥

185.गीत-"चलते हैं हम"

रतन लाल जाट

चलते हैं हम, आती है हवाएँ।

मगर तुम बिन ये प्यासी-प्यासी हैं॥

सुनती नहीं पुकार अपनी है।

चलने को निकले हम अकेले हैं॥

प्यार मेरा है इतना,

जिसे कोई रोक पाये ना।

वो तूफा में भी अटल,

रस्ता नहीं कभी भूलता॥

ये हवाएँ रूक-रूककर कहती है।

तेरे-मेरे प्यार की जो कहानी है॥

चलते हैं हम, आती है हवाएँ।

मगर तुम बिन ये प्यासी-प्यासी हैं॥

186.गीत-"याद"

रतन लाल जाट

बार-बार मुझको, तेरी याद आती है।

दिल मेरा हरपल घबराता है।।

कितने जने हैं साथ मेरे?

फिर भी मैं बेगाना हूँ तेरे।।

क्या अपना, क्या पराया?

सबकुछ है अनजाना-सा।।

इस घेरे में आ फँसा हूँ।

बिन तेरे मैं अकेला यूँ।।

अब कहाँ है मंजिल अपनी?

जहाँ पर निगाहें कब-से टिकी?

सबकुछ भूल गया हूँ।

बस, तेरी याद आयी है।।

बताओ, अब क्या करूँ?

तुम बिन मैं अकेला हूँ।।

मेरी दुनिया तू मेरा जन्नत।

बस, अपना प्यार और है रब।।

आज सब छोड़कर मैं चला।

इन राहों में भटकता हुआ।।

काँटों में जा अटका हूँ मैं।

ढूंढता तुझको बार-बार हरकहीँ रे।।

ऐसा अजब प्यार है।

और कैसा मेरा हाल है?

अब क्या कहना है?

बताओ, कहाँ सजना है?

दौड़ा-दौड़ा सारा जहाँ खोज लूँगा।

मैं इस दुनिया एक कोना-कोना॥

अब तुझको पाकर ही रहूँगा मैं।

चाहे तू दुनिया के उस पार है॥

मिलकर रहना है मुझे संग तेरे।

आज चाहता है बस मेरा मन तुझे॥

ऐसे प्यार के क्षण याद करके,

लगे कि- अलग हूँ मैं जहाँ से।

बस, मेरी प्यारी-सी बाला!

तुझको निभाना है साथ मेरा॥

जिसकी मंजिल, उसकी चाहत।

सबकुछ मेरे पास, फिर भी सताये याद॥

अब और कितना तड़पूँ?

एकपल भी तू मिल जाये।

तो सारे गम भूल गाऊँ,

और फिर हम जुदा ना होयें॥

लेकिन अब तेरे बिना,

मैं जी ना पाऊँगा।

तुमसे मिलन की आशा,

मरते दम तक रखूँगा॥

मुझको याद तेरी तड़पाती है।

सपने में वो तुमसे मिलाती है॥

छिपकर कहाँ तुम बैठी हो?

मेरे दिल की है मालिक जो॥

मेरे नैनों को करे ईशारा।

कि-बरसाओ तुम अश्रु-धारा॥

श्वाँसें भी चलती तेज-तेज हैं।

जैसे अन्दर उठा कोई तूफान है॥

ऐसा अजब उसका जादू।
करूँ कोशिश फिर भी ना काबू।।
पलभर पास मेरे कभी वो आती है।
तब देखकर उसको नाच उठता हूँ मैं।।
बिछुड़ने के बाद, रूलाती है तेरी याद।
हँसी की जगह अब, रूदन है मेरे मन।।
बस, रहता हूँ मैं आतुर।
तेरी ही चिन्ता में व्याकुल।।
कहाँ वो होगी? क्या करती होगी?
और मैं यहाँ हूँ बिन उसके अजनबी।।
अब ना कुछ समझ में आता है।
ना रहती मुझको अपनी खबर है।।
दिल में बस वो ही बसी है।
ऐसे लगे कि- जैसे वो जिन्दगी है।।

पास है नहीं वो, फिर भी आग जलाती।
मालूम नहीं कैसे वो अंगार बन जाती।।
बस, मुझको एहसास हो जाता है।
वो दिल में आ जब बस जाती है।।
लेकिन करता हूँ मैं कोशिश,
कहीं इस आग में जल ना जाओ तुम।
वरना कौन जलायेगा तुम बिन,
ऐसी आग मेरे दिल में हरपल।।
जब याद उसकी ना आये।
तो लगे कि- जीना ही बेकार है।।
चाहे जो हो जाये, लेकिन कभी ना बदले।
यादें, वादे और इरादे, अपने इस प्यार में।।

जन्नत का सिंहासन मिले,

या नरक का दरवाजा खुले।

उसके साथ सब मुझको अच्छा लगे।

नहीं तो अकेला जन्नत छोड़ आऊँ मैं।।

ले चल संग अपने, तू मालिक हम बन्दे।

दोनों मिलकर रहेंगे हम जन्मों-जन्मों रे।।

187.गीत-"दिल से"
रतन लाल जाट

दिल से है मेरा प्यार तुमको।

पिछले जीवन में भी ना छुटे वो।।

मेरी जान हो तुम सदा ही।

ना भूल सकूँगा मैं कभी।।

चलती दुनिया में एक छुपा रूस्तम है तू वो।

इसीलिए छिप-छिपकर देखता हूँ मैं तो।।

अरे! कभी नहीं रोना तुम।

हँसी-खुशी से चले जीवन।।

जो सदा ही फले-फूले।

आनेवाला कल भी महके।।

इस दुनिया में कुछ करके दिखाओ।

तेरे नाम लेकर मैं बताऊँगा सबको।।

साथ मेरे तुम चलना।

यहीं-कहीं हमको रहना।।

कोई ना जाने एक पल।

अपने मन का कोई गम।।

साथ निभाना मंजिल तक।

ताकि मैं हारूँ ना हिम्मत॥

दूर हवाएँ लेकर आयेगी,

खुशबू तेरे इस बदन की।

ताकत बढ़ायेगा मेरी वो।

दुनिया से लड़ते हुए जीने को॥

188.गीत-"कहाँ खोजूँ?"
रतन लाल जाट

कहाँ खोजूँ? राहों में तेरे,

मैं नैन अपने बिछाऊँ।

अब मैं यहाँ-वहाँ जाऊँ,

बताओ, तुझे कहाँ खोजूँ?

क्या पता? प्रियतम मेरा,

अब रहता है वो कहाँ?

कहाँ खोजूँ? मैं कहाँ खोजूँ?

ये है दिवानगी,

तू है मेरी आशिकी।

क्या बतलाऊँ?

अब मैं कहाँ हूँ?

श्वाँसों में बसा हूँ,

धड़कनों में समा हूँ॥

कहाँ खोजूँ?

दिल में तू कहाँ हैं?

आकर थोड़ा-सा, इंतजार कर

बाँहें अपनी फैला दो खुलकर॥

मुझको दिल में छिपा ले तू।

मैं तेरे अंतरतम में बस जाऊँ।।

सीने में कहीं गुम हो गया है।
पागल है तू एक शरारती है।।
अब जायेगा कहाँ?
मैंने सारी दुनिया जान ली है।
ज्यादा सयाने बन गये हैं,
आजकल लोग इस दुनिया में।।

जो फिरते रहते गैरों के पीछे यूँ।
गँवा देते हैं जिन्दगी अपनी क्यूँ?

रे पगली तू! समझती क्यों नहीं है?
जिन्दगी सारी जी है, तेरे साथ मैंने।।
अब कान खोलकर सुन ले।
तेरे सिवाय मेरा कोई ना है।।
रग-रग में बसा हूँ।
आँचल में तेरे छिपा हूँ।।
तन में हूँ, मन में हूँ।
दिल में और धड़कन में हूँ।।

189.गीत-"ना जाने क्यों?"

रतन लाल जाट

ना जाने क्यों? हमको प्यार हुआ है।
रब ही जाने, इसमें क्या राज छुपा है?

जो हम कर-कर कोशिशें थक गये।
ताकि छूट जाये अपना जो प्यार है।।
लेकिन बात कुछ अलग ही नजर आती है।

वो अब और भी दिल में हलचल हुई है।।

चाहे वो कभी ना प्यार करे हमसे।
लेकिन हम तो दिन-रात चाहते हैं।।
भले ही वो हमको भूल जाये हमेशा के वास्ते।
लेकिन हम तो जन्मों तक साथ निभायेंगे।।

बस, हमको रोना ही हरपल आता है।
देखें, गम उसके तो सुख अपने भूल जाते हैं।।
बताओ, अब कैसे ये कहानी पूरी होनी है?
सुनो, आज हम एक-दूजे से जूदा हो गये हैं।।

190.गीत-"हँस-हँसकर हम"
रतन लाल जाट

हँस-हँसकर प्यार करते थे।
रो-रोकर अब अलग रहते हैं।।
बस, इतना ही मिलन था अपना।
एकदिन हमको जुदा होना था।।

कभी दिन ऐसे बीत जाते थे।
मानो वो एकपल के बराबर हैं।।
लेकिन अब एक-एक पल मुश्किल कटता है।
थक गये हम दिन-रात कर-कर इन्तजार है।।

किसी दिन तुम मेरी दुनिया थे।
आज ये दुनिया तुमबिन अकेली है।।
कभी महकता फूलों का एक गुलशन था।
लेकिन आज है काँटों की एक चुभन यहाँ।।

किस्मत में बस खुदा ने यही लिखा था।

कि- हमको मिलकर फिर होना है जुदा।।

कभी रोना नहीं, हरहाल में जीना है।

अपना प्यारा वो संसार भूल जाना रे।।

191.गीत-"मेरे दिल में"

रतन लाल जाट

मेरे दिल में तुम बस जाओ।

थोड़ा-सा प्यार बन छिप जाओ।।

मेरे दिल की आवाज सुन लो।

हम दिवानों से नफरत छोड़ दो।।

कुछ ही दिनों का प्यार मिला है।

फिर ना जाने कल क्या होना है?

अब एक ही बात ठान लो।

सारे जग में प्यार भर दो।।

कहीं ऐसा ना हो जाये।

हम बिन तेरे मर जाये।।

तुम आकर प्यार से हमको चूम लो।

फिर थोड़ा-सा हँसकर मुस्करा दो।।

हम चले जायेंगे अब दूर कहीं।

ना ही तुमको मिलेंगे कभी।।

तब दिवाना कितना तड़पेगा वो?

जब दिल में अधूरे सपने देखेगा तो।।

फिर कहाँ वो तुमको मिलेगा?

दुनिया छोड़कर कहीं छिप जायेगा।।

क्या जानते हो तुम?

कितने मुश्किल से मिले हम?

इस जहाँ में मिलन दिलों का दो।

होता है कई जन्मों-जन्मों में वो।।

192.गीत-"इन लड़कियों के चक्कर में"

रतन लाल जाट

इन लड़कियों के चक्कर में

कभी ना तुम आना रे।

मीठी-मीठी बातों में

वो तुमको भरमाये रे।।

जो करती हैं प्यार में

बेचैन हमको दिल-रात रे।

क्या पता है इन लड़कियों का?

कब उड़ा दे कहीं आँचल अपना रे?

दिल में जलता अंगार हैं लड़कियाँ।

जो कितनी ही करातीती है लड़ाईयाँ?

कब किया है इन्होंने किसी से प्यार सच्चा?

कच्चा जीवन, कच्चा बंधन, सबकुछ है कच्चा।।

फिर ना जाने क्यों ये हमसे प्यार करती हैं?

जो बात किसी की ना माने बस मस्ती है।।

जीवन की हरियाली में

मदमस्त हवा बसंती है।

मगर आते ही उसके

सब थम जाती हैं।।

कोयल की वाणी बदल जाये

कर्कश तानों में।

नाचते मोर भाग जाते हैं

जैसे आये कोई शिकारी पकड़ने।।

सारा प्यार मिट जाये।

जब कुछ पल ऐसे आते हैं।।

जब तक आस है, तब तक पास है।

फिर उसके बाद न जाने छोड़ कहाँ जाये रे।।

193.गीत-"आँखों में मेरे"

रतन लाल जाट

आँखों में मेरे आँसू ये,

ढुलक आये हैं तेरी याद में।

आँगन में सोयी हूँ,

कब आयेगा साजन तू?

दिन-रात बस मैं करूँ,

इन्तजार तेरा कितना बोल तू?

बीती हुई बातें याद करके,

दिल मेरा आज दहक उठा है।

आँखों में मेरे आँसू ये,

ढुलक आये हैं तेरी याद आके।

कभी व्यर्थ ना जायेगा,

आँसू अपनी पिया का।

यदि वो दिल से प्यार करे,

तो मिलेगा साजन उसका।।

खयाल रखना प्रियतम का अपने,

यादों में कभी भूल ना जाना उसे।

आँखों में मेरे आँसू ये,

ढुलक आये हैं तेरी याद आके।

धड़कन अपने दिल की बढ़ जाती।

कसम है बस मुझको तुम्हारी।।

ओ मेरे सजना दिल अपना मैं।

सौंप चुकी हूँ हमेशा के लिए।।

आँखों में मेरे आँसू ये,

ढुलक आये हैं तेरी याद आके।

मन मेरा तुझमें बस गया।

अब वो जायेगा छोड़ कहाँ?

आकर मिलना ही होगा।

अब और कुछ भी है ना।।

सजनी ओ सजनी तू है मेरी सजनी।

तेरे आँचल में है जिन्दगी ये जिन्दगी।।

मस्ती से हमने गुजारी हरघड़ी है।

अब कैसे हो सकते दूर तुमसे?

आँखों में मेरे आँसू ये,

ढुलक आये हैं तेरी याद आके।

साथ ना मैं छोड़ूँगा।

कभी तू दूर ना जाना।।

हम आशिक हैं,

प्यार में जीते-मरते।

संग तेरे हरपल रहते हैं।।

आँखों में मेरे आँसू ये,

ढुलक आये हैं तेरी याद आके।

मेरी जान है तू, जग सारा जान गया।

दिल में मेरे तू, कहता है ये जमाना॥

नहीं रे नहीं, तुमने जो कहा है सही।

सजनी ओ सजनी, बस तू है मेरी॥

प्यार में हमने, बात कुछ नहीं छिपायी है।

दिल की बात दिल से ही कही है॥

आँखों में मेरे आँसू ये,

ढुलक आये हैं तेरी याद आके।

194.गीत-"एक लड़की, जिसका मैं दिवाना"

रतन लाल जाट

एक लड़की, जिसका मैं दिवाना।

बिन उसके बेचैन हूँ दिन सारा॥

संग उसके चाहते हैं,

पल कुछ जीना।

आओ, एक दुनिया में,

जहाँ सब हो नया॥

एक लड़की, जिसका मैं दिवाना।

बिन उसके बेचैन हूँ दिन सारा॥

प्यार करते हैं कितना?

कोई भी जान पाये ना॥

धरती पर लगता है प्यारा।

जैसे वही है संसार अपना॥

एक लड़की, जिसका मैं दिवाना।

बिन उसके बेचैन है जग सारा॥

भले ही सब रहते हैं मुझको घेरे।

फिर भी बिन उसके दिल बेचैन है॥

तू आजा, मेरी दिवानगी देख ना।

सजनी! तुमसे प्यार करते हैं कितना?

एक लड़की, जिसका मैं दिवाना।

बिन उसके बेचैन है जग सारा।।

195.गीत-"ये जहाँ चल रहा"
रतन लाल जाट

ये जहाँ चल रहा,

अपने पथ पर सदा।

कुछ ना कुछ कर्म करना।

चाहत है अपनी आगे जाना।।

सब करते हैं कर्म अपने।

फिर इसके ही नाम पे।।

यहाँ से कोई जाता है नरक-द्वार

और कोई जाता है स्वर्ग के पार

अब क्या करे भगवान?

उन्होंने बसाया है संसार।।

कोटि-कोटि जन्मों से,

मानव जीवन है प्यारा।

ये जहाँ चल रहा,

अपने पथ पर सदा।

ना जाने देखो कितने?

मिलते और बिछुड़ते।

मगर धरती-गगन ये

कभी ना अलग होते।।

यहाँ चाहती है मिलाना।

कोई ना कोई कर बहाना।।

ये जहाँ चल रहा,

अपने पथ पर सदा।

196.गीत-"कैसे हम बड़े हुए?"

रतन लाल जाट

कैसे हम बड़े हुए?

गिरते और संभलते।

आओ, अब हम चलें,

आगे और बढ़ते जायें।।

जीवन में हरदम भटके थे।

ठोकर खा-खाकर सीखे थे।।

हँसते-हँसते ये जीना है।

हरमुश्किल से लड़ना है।

जीवन में कभी ना घबरायें।।

चख-चखकर स्वाद दुखों का।

मन को अब रास आ गया।।

छोटी-छोटी बातें

गाँठ हम बाँध लें।

धीरे-धीरे कदम बढ़ाके

आगे चलते ही रहें।।

197.गीत-"चारों ओर छाया है घेरा"

रतन लाल जाट

चारों ओर छाया है घेरा।

हम दोनों को आकर हेरा।।

आती हैं कई मुश्किलें यहाँ।

जीवन में सुख-दुख है सदा।।

अपने जीवन में दुखों का

आकर लग गया है डेरा।

अब क्यों रोता है?

सुन लें मेरी बात ये।।

कितने दिन रहेगा,

जीवन में ये अँधेरा।

एकदिन तो उगेगा,

सूरज वो नया।

उसकी किरणें दूर-दूर तक,

मिटायेगी अँधेरा।।

धरती और ये अम्बर

इनके जैसे है जीवन।

सच्ची है ये बात,

जीवन में तू उतार।

ये सुख-दुख का जोड़ा है।

अँधेरे के बाद उजाला है।।

दिल में भर लो खुशियाँ,

होंठों पर छायी रहे मुस्काँ।

थोड़ी-सी तुम हिम्मत रखना,

काँटों को फूल मान चलना।

हँसते-खिलते जीवन में

आयेंगे दुख कई सारे।

लेकिन इनसे है ना,

रिश्ता कोई मेरा।।

198.गीत-"मन करता है संग तेरे"

रतन लाल जाट

मन करता है संग तेरे।

अपना जीवन जीऊँ मैं।।

कुछ ऐसा ही दिल चाहे।

मिलने को तुमसे कोशिश करे।।

अब क्या कहकर समझाऊँ

दिल मेरा माने ना क्यूँ

लगता है सब सूना-सा।

दिन-रात ये इन्तजार करता।।

और हरपल याद सँजोता मैं।

बिन तेरे अब मुझको नहीं रहना है।।

आँखें मेरी देखे सूरत तेरी,

सपनों और ख्वाबों में भी।

श्वाँसें अपनी तेज-तेज चलती।

जुबान बस तेरा नाम जपती।।

दिल चाहे तुझमें बस जाऊँ।

अब मैं कहीं ना जाऊँ।।

जन्मों तक साथ निभाऊँ,

प्यार मैं नित करती रहूँ।।

बताओ, फिर दिल क्यों बेचैन है?

मेरे जीवन में एक तू ही तो है।।

कौन कहता कि- प्यार नहीं?

दिल में दर्द बिन तेरे हैं सभी।।

आँचल मेरा भीग गया

बस, तेरी यादों में रोया।

सबकुछ मेरा खो गया है।

बिन तेरे अब जी ना लगता है।।

मन करता है संग तेरे।

अपना जीवन जीऊँ मैं।।

199.गीत-"कोई किसी का संग नहीं"

रतन लाल जाट

कोई किसी का संग नहीं।

कोई अपना है नहीं।।

रिश्ते ये सारे अधूरे हैं।

फिर क्यों बंधन मिलते हैं?

तेरे-मेरे संग है बंधन

टूट जाये वो धरती पर

कोई किसी का नहीं संग

कोई अपना है नहीं अब

ये सारा जहाँ, अकेला है।

क्यों नहीं मिलता सहारा है?

रिश्ते ये सारे अधूरे हैं।

फिर क्यों बंधन मिलते हैं?

कितने आड़म्बर है? साथ सब बंधन के।

कौन है तुम्हारा? किसी को क्यों न मानें?

साथ मिले या ना मिले,

लेकिन जीवन चलता है।

अकेले हैं हम,

अकेला है सारा जहाँ भी।।

कोई किसी का संग नहीं।

कोई अपना है नहीं।।

उल्टे-सीधे ये रिश्ते,

ना जाने कब मिल जाते?

जो रोकते हैं हमको,

अपनी राह पर चलते।।

रिश्ते ये सारे अधूरे हैं।

फिर क्यों बंधन मिलाते हैं?

200.गीत-"ईश्क ना करना"
रतन लाल जाट

ईश्क ना करना

किसी से तुम।

जीवन में ना

कोई है कम।।

स्नेह का सागर बनो,

तुम प्रेम की मूर्ति हो।

ईश्क से नाता तोड़ो,

श्रद्धा का ध्यान करो।।

क्या समझते हैं लोग बेगाने?

नहीं बदल सकते हैं कभी हमें।।

कैसे जान पायेंगे रिश्ता ये प्यार का?

जो सच्चा है ओर पैनी-धारवाला।।

प्यार करने को दिल दो होते हैं।

कभी भूले ना जाये वादे और कसमें।।

कितनी चाहत यादों में रखते हैं?

कितने ख्वाब हम सँजोते हैं?

मानव को क्या जरूरत है दानव की?

अपनी हरकतों से बाज ना आते कभी।।

मानव है सबसे बड़ा, जग में वो प्यारा।

जो देवों को भी लगता बहुत है दुलारा।।

स्नेह सबसे बढ़कर एक जादू है।

जो पानी में भी आग लगाता है।।

प्रेम की शक्ति कितनी महान है?

जो मरते को देती जीवन दान है।।

विश्वास है फिर क्यों ना?

मेरे प्यारे अब बोल ना।।

201.गीत-"हम आपके पैरों में"
रतन लाल जाट

हम आपके पैरों में, धूल हैं जैसे।

अमृत से अपने चरणों को धो दे।।

ताकि हम भी पवित्र बन जायें।

यही हमारी आशा और सपना है।।

इतनी–सी मेहरबानी हम पर करना।

इस वादे से तुम कभी ना मुकरना।।

हम आपही राहों में बिछे फूल हैं जैसे।

आओ, तुम चलकर हमको कुचल देना है।।

हम मिटकर तुम्हारे में समा जायेंगे।

इतनी-सी दया आप हम पर कर दें।।

आपसे दूर रहना, हम सह ना पायेंगे।

जहाँ भी रहोगे तुम, वहाँ दौड़े आयें।।

हम कहीं दूर ना जायेंगे।

सारी खुशियाँ यहीं पायेंगे॥

और कुछ भी नहीं,

इच्छा है अपनी।

बस, इतनी-सी मेहरबानी कर दे।

प्रेम से मेरे जीवन को भर दे॥

202.गीत-"हम किसान हैं।"
रतन लाल जाट

हम किसान हैं, जो किसी के सहारे जीते नहीं।

औरों को जीवन देते हैं, कभी हाथ फैलाते नहीं॥

सबको भिक्षा में दान हम करते हैं।

लेकिन किसी की दया पर नहीं जीते हैं॥

हम किसान हैं, खुद पर विश्वास है।

साहस और संघर्ष भरी, हमारी जिन्दगी है॥

और क्या कहें? हम किसान है।

हम सजाने, एक नया जहान है॥

सूरज का जलता अंगार हमको जला नहीं सकता।

देख तपती धरा को साहस अपना और भी बढ़ जाता॥

हम किसान हैं, जो खून पसीने की तरह बहाते हैं।

पत्थर से पानी और माटी से सोना, हम उपजाते हैं॥

सब कहते कि- फसल गयी है।

और आपस में बातें करते॥

कि- धरती हरी-भरी लग रही है॥

पर ना मालूम इसके पीछे मेहनत जो है॥

हम किसान हैं, जो धरती माँ के लाल हैं।

इस जगत् के वास्ते दिन-रात मेहनत करते हैं॥

हम किसान हैं, जो खून का सौदा करके अन्न उपजाते हैं।

जिस पर सब लोग प्यासी आँखों से सदा टकटकी लगाये हैं॥

तपती ज्वाला में खुद सूख जाते हैं।

लेकिन घास हम हरी-भरी रखते हैं॥

203.गीत-"अभी तक जिन्दा है"

रतन लाल जाट

अभी तक जिन्दा है प्यार मेरा।

देखो, वो अटल है विश्वास अपना॥

चिर-वादा है तेरे लिए।

हाथों में अपनी जान मेरे॥

जब हम देखते हैं तेरी सूरत।

और सुनते हैं दिल की जुर्रत॥

तब मन में छा जाती है मतवाली खुशियाँ।

और दिल मेरा भर जाता है सुख से ज्यादा॥

वो मौसम, वो हवा,

सावन की बहार का।

खेत-खलिहान हरा-भरा॥

नाचते मोर, बोलते पंछी।

आँखों में प्यारी सूरत तेरी॥

हवाओं में आँचल है उड़ता।

हम एक-दूजे के साथ हैं सदा॥

लबालब भरे हैं ताल-तलैया।

बहते पानी में हमने खूब तैरा॥

भीगा-भीगा मौसम, भीगे हैं कपड़े।

बालों की लटें गालों पर टपकती हैं।।

देखे हैं मैंने टकटकी लगाये यहाँ।

जीवन में प्यारे लम्हों का चखा मजा।।

204.गीत-"यहाँ सब मेरे अपने हैं।"

रतन लाल जाट

यहाँ सब मेरे अपने हैं,

फिर भी मैं बेगाना-सा हूँ।।

तो बताओ, वो कौन है?

जिसके लिए मैं बेचैन हूँ।।

वो लड़की देखकर मुझको

कहीं दूर चली जाती है।

जाने दो, उसे जाये जहाँ

हर वो लौटकर आती है।।

जितना दूर वो जायेगी।

उतनी ही पास आयेगी।।

पीछे हरपल मैं दौड़ लगाऊँ।

कभी इस ओर भी मुड़कर देख ले तू।।

ना जाने वो क्या बात है?

जो बिन तेरे हाल बुरा है।।

तू वो बरसते पानी की बुन्द है।

देख जिसे बढ़ जाती प्यास है।।

मगर वो बुन्दें टपकती रूक गयी क्यूँ?

और प्यासा मैं प्यासा रह गया हूँ।।

ना जाने मेरी तकदीर कैसी है?

जो मैं यहाँ और तू वहाँ है॥

जैसे हम नदी के दो किनारे।

जो कभी ना मिल पाते हैं॥

अपनों से अलग हम रहते हैं।

और तेरे मिलन को तरसते हैं॥

जब तक दूरियाँ बढ़ती ही जायेगी यूँ।

तो अमर हो जायेगी प्यार की मैं निशानी दूँ॥

एकपल भी जब तेरी सूरत देख लूँ।

तो बढ़ जाये प्यास, फिर कैसे बुझाऊँ?

अब आकर मुझको मिल जा तू।

नहीं तो मैं खुद ही मर जाऊँ॥

205.गीत-"यह एक वो लड़की है"
रतन लाल जाट

यह एक वो लड़की है,

जिसे हरपल देखता हूँ मैं।

बरसों की प्यास मिट जाये,

जब मुझको मिल जाती तू है॥

एक वो नजर और उसकी मुलाकात।

लगता है जैसे सदियों तक अपना साथ॥

यह एक वो लड़की है,

जो मेरी दिल की धड़कन है।

बस, वो ही मेरा जीवन है,

बिन उसके ना जीना है॥

यह एक वो लड़की है,

जिसने मुझको रूलाया।

पास आकर उसने ही

फिर सीने से लगाया।।

मेरे सूने इस दिल में

अब उसका ही नाम है।

आँखों ने पहली नजर में

चित्र जो प्यारा बनाया है।।

यह एक वो लड़की है,

जो मेरा अधूरा ख्वाब है।

जीवन के सारे सपने,

एक उसी के साथ हैं।।

जब मैंने उसको देखा,

तो बरसों का चैन मिला।

रौनक आयी है, अपने जीवन में।

गुजर गयी हैं, वो दुखभरी रातें।।

,यह एक वो लड़की है,

जिसे हरपल देखता हूँ मैं।

बरसों की प्यास मिट जाये,

जब मुझको मिल जाती तू है।।

206.गीत-"दिल का रिश्ता"
रतन लाल जाट

दिल का रिश्ता, जोड़ा है मैंने,

क्या है पता? तन-मन के रिश्ते।

कब मिलते और छूट जाते हैं?

लेकिन दिल का रिश्ता सच्चा है।

जो दुनिया के उस पार भी जाता है।।

कल का क्या भरोसा?

ये तन कच्चा है, जो मिट जाये।

और यह मन ना जाने,

कब बदल जाये इसलिए।

दिल का रिश्ता, जोड़ा है मैंने

दिल के मिलन से

मिलती हैं धड़कनें

और अपनी श्वाँसें

साथ ही ये आँखें

दिल का मिलन ही मिलन है।

वरना बाकी सबकुछ स्वप्न है।।

दिल का रिश्ता, जोड़ा है मैंने

207.गीत-"कब दिल मिलता है?"

रतन लाल जाट

कब दिल मिलता है?

कहने से क्या होता है?

जन्मों और सदियों में,

होना है जो होता है।।

नदी से झरना

धरती से आसमां

कब कहने से मिलते हैं?

बस, यह संयोग होता है।।

पिछले जन्म का मिलन

होता है फिर इस जन्म।

जिनका मिलना लिखा है।

वो मिलकर ही रहते हैं।।

चाहे कितनी भी मुश्किलें?

और जन्मों तक दूरियाँ है॥

दूर से पास, पास से दूर

मिलन में होता है खूब

जुदा होने पर भी

लोग मिल जाते हैं।

पास रहकर भी

वो अनजान रहते हैं॥

बंधन यह मिलने से नहीं मिलता है।

रिश्ता यह कभी तोड़ने से नहीं टूटता है॥

सबकुछ अपने आप ही होता है।

बस, हम तो इस खेल में मोहरे हैं॥

208.गीत-"सावन के झूलों में"
रतन लाल जाट

वो दिन कितना सुन्दर था?

जब सावन के झूलों में,

मैंने उसको देखा था॥

वो दिन कितना सुन्दर था?

वो मस्त बहार का झोंका,

खुद को ही मैं भूल गया।

कहाँ था मैं ना पता?

बस, किसी में खो गया॥

उस मौसम में आकर बादल ने,

हमको सबको भीगोया था बरसके।

भीगे-भीगे फिर हम चले,

अपने घर की ओर दौड़े-दौड़े॥

आगे वो, पीछे मैं,

जैसे मंजिल और हो रास्ता।

वो दिन कितना सुन्दर था?

मखमल का आँचल था,

जो गगन में रह-रहकर लहराता।

तभी एक झोंका-सा आया,

मैं उसके संग कहाँ खो गया?

वो दिन कितना सुन्दर था?

209.गीत-"जो थे वादे"
रतन लाल जाट

जो थे वादे, वो टूट चुके हैं अब।

दोस्ती आजमाने को, नहीं करता है मन॥

हँसी-मस्ती की वो बहार थी।

जो रूक-रूककर अब थम गयी॥

पहले एक प्रेम-नदी थी।

जो लाँघ करके घाटी

ऊँचे-ऊँचे पर्वतों की चोटी

झरना बन गिरती थी॥

जहाँ नहाये थे हम,

एक-दूजे के संग।

तम-मन की धूल,

उस दिन गयी उतर॥

धीरे-धीरे फिर एकदिन ऐसा आया।

भूचाल उठा, हमको अलग ही कर दिया॥

जैसे एक नदी के हम दो किनारे हो।

कितनी भी कोशिश करे, मिलन ना हो॥

वो मधु था, थी वो सावन की झड़ी तब।

जो बीत गयी हैं प्यार की घड़ी अब॥

पहले मिल जाती थी आँखें हमारी।

देखकर एक-दूजे को झूक जाती थी॥

तेरा गूँजन मेरे कानों में,

रूप दुनिया में हसीन लगे।

कभी ना जाओ तुम मुझसे दूर।

पल-पल जीना है प्यार में खूब॥

210.गीत- "दिल मेरा कहीं ओर है"
रतन लाल जाट

दिल मेरा कहीं ओर है।

यहाँ तो बस हम अकेले॥

जहाँ रहता है दिल,

वहीं लगता है मन।

चाहे कितनी ही दूर,

रहे अपने तन॥

लेकिन जगते हुए भी याद वो आये।

रात को सोते ही सपने में जो आये॥

चाहे जीऊँ या मरूँ मैं,

मेरी जिन्दगी संग उसके।

दिल मेरा कहीं ओर है।

यहाँ तो बस हम अकेले॥

जैसे दिल एक पतंग है।

डोर उसकी वो खींचे रे॥

कहीं ओर जाये ना,

कभी ये दिल मेरा।

उसको छोड़के, किसी के हाथ में।

एकपल को भी, ना भूले हम कभी॥

दिल मेरा कहीं ओर है।

यहाँ तो बस हम अकेले॥

दोनों दिल एक साथ हैं।

एक ही तन में निवास है॥

दूर होकर भी वो पास हैं,

जब चाहे, तब मिल जाते हैं॥

दिल मेरा कहीं ओर है।

यहाँ तो बस हम अकेले॥

211.गीत-"क्या चाँदनी फैली है?"
रतन लाल जाट

क्या चाँदनी फैली है?

इस नीले गगन में।

सबकुछ शांत ही है,

फिर क्यों मन धड़के?

देखकर किसको हूँ मैं खड़ा?

इन्तजार है किसके आने का?

कभी ना कभी वो आयेगी।

आकर मुझको दिल से चाहेगी॥

क्या सुन्दर-सा?

देखा है नजारा।

यह धरती सहमी-सी,

आज नींद में सोयी।

सबकुछ ऐसा लगता है,

मानो रजत से बना है।

रजनी के प्रियतम ने,

आकर मुझसे कहा धीरे-से।।

आज ये नजारा इस धरती पर।

छाया है जादू-सा बनकर।।

जो आया है मेरे लिए,

क्या करूँ मैं, वो कब आये?

दिवानी छिप-छिपकर देखे,

उसको कितना चाहूँ मैं।।

अपना जानकर मुझे,

आ जा तू, आज आना है।

212.गीत-"समय बलवान है"
रतन लाल जाट

सब कहते हैं, समय बलवान है।

किसी दिन हम मरते थे उस पर।

लेकिन अब वो मरती है हरपल।।

जिसके इंतजार में, हम तरसते थे।

अब वो खुद मिलने को तड़पते हैं।।

सब कहते हैं, समय बलवान है............

कभी उसकी याद में,

रहते थे हम खोये-खोये।

अब वो अपनी चाहत में,

दिन-रात जी-भरके रोयें।।

जहाँ अपनी कठिन मंजिल है।

अब उसके आगे की राह भी खोज ली है।।

सब कहते हैं, समय बलवान है...........

जो ऊपर था, बड़ा बन अकड़ता।

आज वो जमीं पर, धीरे-से आ गया।।

इसीलिए तो समझो, बात जो कही है।

वक्त निकलते सब बदल जाता है।।

सब कहते हैं, समय बलवान है...........

213.गीत-"सब मिलते-से"
रतन लाल जाट

सारी अवनि और ये आसमां।

घेरे है हमको, कभी हो ना जुदा।।

अपने प्यार का ये सिलसिला।

जादू-सा बन हर तरफ छाया।।

जिधर देखा था मैंने,

सबओर तुझको ही पाया।।

नभ में फैले सितारों की जगमग ज्योति।

लगती है मानो, हमको राह दिखलाती।।

बरसते मेघों की रसधार में।

तन धूला और धूला मन है।।

फूल-बगीचों में गुनगुनाते हैं भंवरे।

वो अपना नाम जपते-से मालूम होते हैं।।

सब ओर मनभावन-सा,

इस हरियाली में सावन बरसता।

सारा जहाँ भी हमको,

अपना-सा लगने लगा॥

हरमोड़ पर नजर आते हैं।

सब मिलते-से मालूम होते हैं॥

लम्बी जुदाई में, पास-पास खड़े।

हम डोलते-नाचते और खेलते हैं॥

इस प्यार में शरमाके, नयन झूकाये।

इधर-उधर देखते हैं, नाम अपना आसमां में॥

धरती माँ का आँचल लहराया।

चित्र खींचने को हिलता-डुलता॥

हम दिवानों को झूला-झूलते देखा।

छिप-छिपकर मिलते हैं सब यहाँ॥

अपने प्यार का ये सिलसिला।

जादू-सा बन यहाँ-वहाँ छाया॥

214.गीत-"क्या कहूँ मैं तुमको"
रतन लाल जाट

क्या कहूँ मैं तुमको, कुछ कहा नहीं जाता है।

बातें वो सारी मेरे दिल की, तूने जान ली है॥

एक तुम ही मेरे दिल में बसी।

जो रहती हो दिन-रात छिप कहीं॥

पाकर तुमको मैं, भूल गया तन-मन अपना।

दिल था जो मेरा, पहली ही बार नजर में दिया॥

तुमको बसाया है अपनी आँखों में।

एक प्यारी-सी मूरत बनाकर हमने॥

दिन-रात मैं पल-पल चाहता हूँ।

साथ तुम्हारा जन्म-जन्म तक यूँ॥

हर श्वाँस तेरी माला जपे।

होंठ भी बोले नाम धीरे-धीरे॥

तेरे दर्शन का प्यासा, मैं इधर-उधर देखता।

कहीं तो मिलन हो जाये भूल से ही हमारा॥

देख तुमको सबकुछ भूल जायें।

दर्द-पीड़ा और सारे गम भी अपने॥

तुम बिन दुनिया भी,

खुद को अकेला देखती है।

ये हवाएँ चल रही हैं बड़ी जोर-से।

करता है पुकार दिल भी बार-बार ये॥

अम्बर भी आँखें खोल अपनी।

टपक रही आँसू की बून्दें थी॥

यह धरती रो-रोकर भरती आहें।

वो मिलने को आतुर है इंतजार में॥

तुम ही तो सबकुछ हो।

फिर क्यों तड़पती हमको॥

प्यार में इतना क्यों?

दिल की बात तुम कहो॥

हम बुलाते हैं तुमको, जल्दी से आ जा रे।

बिन प्यार जीवन सारा, लगता बेगाना है॥

215.गीत-"कहाँ तुम रहती हो?"

रतन लाल जाट

कहाँ तुम रहती हो?

कहीं तुमको पाता हूँ।

अपने दिल में देखता,

फिर भी याद आती तू।।

इधर-उधर देखें, बिन प्यार रोयें।

रगों-रगों में एक-दूजे के बस गये।।

श्वाँसें तेरा ही नाम जपे।

प्यासी आँखों में तू ही रहे।।

होंठों पर बात तेरी आये।

हाथ मेरे नाम तेरा ही लिखे।।

ख्वाबों में पाता हूँ,

धड़कन में रहती हो।

यादों में खोया हूँ,

सपने में आती हो।।

करता हूँ वादे, कसम तू दिलाये।

आता हूँ मिलने को, कहीं तू मिल जाये।।

रहती हो तन में, मन फिरता है कहीं वो।

मिलती हो रात में, दिन में खोजे क्यों?

कभी तू हँस-हँसके रूलाती हमको।

लम्बी जुदाई के बाद फिर आती हो।।

कहाँ से आयी और कहाँ चली गयी वो।

कुछ पता नहीं, तुम अब कहाँ बसी हो?

216.गीत-"अब रहना होगा, बचकर तुमको"

रतन लाल जाट

अब रहना होगा, बचकर तुमको।

अब यूँ ना समझना, कभी रोयेगा वो।।

बस गये हैं हम, तुम्हारी यादों में।

याद करोगी तुम, हरघड़ी जो हमें॥

जीवनभर साथ ना छूटेगा तो।

कैसे तू भूल सकेगी प्यार वो॥

हम तुम्हारी श्वाँसों पर जीते हैं।

इन आँखों में तेरी मूरत बसाते हैं॥

अब चाहे तू ना मिले हमको।

जिन्दगी के मोड़ पर मिलेंगे तुमको॥

तेरा दिल कभी हमको भूल ना पायेगा।

बिन हमारे सबकुछ सूना-सूना लगेगा॥

आँसू बहा-बहाकर, मुश्किल से कटेंगे पल वो।

सुन ले मेरी साजन, प्यार का है ये असर जो॥

तुमने सबकुछ पाया है।

तन-मन अपना गँवाया है॥

दुनिया अपनी कर दी नाम तुझको।

बस, अपना ही मान लिया है तुमको॥

217.गीत-"वो लड़का"

रतन लाल जाट

वो लड़का कितना प्यारा है?

जो हरपल मुझको चाहता है॥

जीता वो मेरे लिए, मुझ पे मरता है।

जिसने अपना तन-मन, मुझको दे दिया है॥

कितना भोला है? वो कितना पागल?

जो अपने वादें निभाता है अटल॥

मेरी आस सँजोये वो जीता है।

मुझमें ही अपनी दुनिया देखता है॥

जिन्दगी के हर मोड़ पे,

एक वो ही मुझको मिले।

जो मेरा भी प्यार है,

और उसका प्यार हूँ मैं॥

जिसकी हर बात में, जादू मेरा बोले।

वो अपना सारा जीवन, नाम मेरे लुटाये॥

नैनों में बसाता है वो,

सपनों में ले जाता है वो।

जिसकी धड़कन मेरे दिल में,

जो बात-बात पर मुझको याद आये॥

जीवन के दुखों से लड़कर,

वो साथ मेरा निभाता है।

काँटों-भरी डगर में चलकर,

फूल-सा मुझको रखता है॥

आज मैं उसको कर दूँ।

तन-मन और जीवन दूँ॥

जन्मों तक वो साथ रहे,

अपना प्यार सलामत रहे॥

218.गीत-"क्या-क्या ये समाँ है?"

रतन लाल जाट

क्या-क्या ये समाँ है?

चल रही हवा ये ठण्डी है॥

उड़ते-उड़ते हम सब उड़ते हैं।

झकझोरता-सा ये दिल उड़ता है॥

खिलते-महके फूल हैं।

कहाँ से ये खुशबू आयी है?

क्या-क्या ये समाँ है?

चल रही हवा ये ठण्डी है॥

ये समाँ आज नीचे,

स्वर्ग बनकर आया है।

संग तेरे-मेरे,

कितना प्यार लाया है?

देखो, तुम भी जरा ये।

दिल की बताओ ना बातें॥

क्या-क्या ये समाँ है?

चल रही हवा ये ठण्डी है॥

अपना क्या सपना है?

पूछो, आज अपने दिल से।

इधर ये कौन आया है?

चलो, आज मिलकर आये॥

क्या-क्या ये समाँ है?

चल रही हवा ये ठण्डी है॥

अपने में प्यार भरा है।

सबकुछ हमारे में छिपा है॥

जो भी पास आया अपने।

कभी वो खाली हाथ ना गया है॥

क्या-क्या ये समाँ है?

चल रही हवा ये ठण्डी है॥

यहाँ चाँद-सितारों का,

दिन-रात हैं पहरा।

नदियाँ-सागर बहते हैं,

जी भरकर सबने नहाया॥

कोई आया है साथ मेरे,

आँखें खोल उसे देख ले।

बड़ा-ही दिवानापन है,

गजब के वो दिलबर हैं।

क्या-क्या ये समाँ है?

चल रही हवा ये ठण्डी है॥

219.गीत-"तू ही तू"
रतन लाल जाट

तू ही तू, दिल में तू।

धीरे-से आकर,

कैसे बस गयी तू?

मेरी रग-रग में,

कैसे रम गयी तू?

एक सुन्दर-सा प्यारा,

साथ मेरा है तू।

बस, दुनिया तो कहने को,

वरना सबकुछ है तू॥

तू ही तू, मेरी दुनिया।

तुम बिन, बेगाना है जहाँ॥

सूने-सूने इन नैनों से,

प्यार तेरा नित बरसे।

दिल की धड़कन में

एक चाहत है तू।

और सारे अरमां,

एक सपना भी है तू।

मैंने आज खड़े-खड़े,

यहाँ से वहाँ फैलायी बाहें।

आ जा, तेरे सिवा

ना किसी को चाहूँ मैं॥

एक मेरे सीने से लग गयी तू।

तन-मन लगाके दिल ले गयी तू॥

आयी है इस दिल में।

वो भा गयी है मन में॥

जो मेरा ख्वाब है,

एक यही आस है।

वादा कर गयी,

उसको निभाना है।

कसम है वो मेरी,

उसे ना तोड़ना है॥

दिल में हरपल तू,

जीवन का प्यार है तू॥

तू ही तू, दिल में तू।

धीरे-से आकर,

कैसे बस गयी तू?

मेरी रग-रग में,

कैसे रम गयी तू?

220.गीत- "किसी और से प्यार तुम कर लो।"

रतन लाल जाट

किसी और से प्यार तुम कर लो।

मगर कभी उसका नाम मत लो।।

ऐसा हो नहीं सकता, कब मिलता है दिल?

बताओ किसी और से, प्यार कैसे कर लें हम?

नहीं, नहीं, कभी नहीं।

चाहे दुनिया छोड़े आज ही।।

एक वो ही मेरी दिवानी है।

बिन उसके एकपल भी जीऊँ मैं।।

आपको मिल जायेगा, चलते-चलते।

जिन्दगी में साथ किसी का, होले-से।।

लेकिन हम साथ-साथ हैं तो,

रिश्ता निभाएंगे सात जन्मों।।

दुनिया में इतने सारे लोग हैं,

फिर भी कोई प्यारा ना लगे।

सच्चा प्यार ऐसा बंधन है,

जो मिलके फिर ना टूटे।।

जिसका आँचल थामा है,

साथ उसका ना छोड़ेंगे।

चाहे जान ही निकल ना जाये क्यों?

मगर प्यार उतना ही करेंगे, करते हैं जो।।

साथ कभी ना छुटेगा।

प्यार अपना नाम करेगा।।

हम दिवानों का प्यार,

सदियों तक रहेगा याद।

क्यों भूलें उसको?

ना चाहें किसी को॥

अपने दिल की बात जाने वो।

सपने में देख लेती सब रात को॥

दिल में समायी है।

ख्वाबों में रहती है॥

अब हम करेंगे क्यों?

प्यार किसी और से, बताओ।

किसी और से प्यार तुम कर लो।

मगर कभी उसका नाम मत लो॥

221.गीत-"ए क्यों आया तू?"
रतन लाल जाट

ए क्यों आया तू, मुझसे मिलने को।

अब पछताया यूँ, मन में रोया क्यों?

देखकर तुमको, दिल मेरा डोल गया।

आँखों से आँखें मिली, प्यार हो गया॥

तुमसे मिलते ही, मन मेरा घबराया क्यों?

ऐसा लगा, जैसे तेरा दिल धड़का मुझको॥

क्या कहें? अब हम किसी से।

कोई आकर, हाल अपना पूछे॥

क्या चीज है ऐसी?

जो मुझमें ही छिपी॥

तभी दौड़ा-दौड़ा आया तू,

फिर तुमको ना मिली क्यों?

तेरा है मेरे में एक ऐसा जादू।

जो देखकर तुमको होश खो दूँ।।

आँखें तेरी प्यार के बाण मारे।

कभी ना चूके, आकर दिल को लगे।।

तू बात मन में सोचे जो।

बात दिल मेरा जाने वो।।

तेरी सूरत का वो रूप-रंग।

बस गया है मेरे अंग-अंग।।

अब ना कभी आना तू मिलने को।

तन-मन का हाल बुरा कैसे बताऊँ तुमको?

ए क्यों आया तू, मुझसे मिलने को।

अब पछताया यूँ, मन में रोया क्यों?

222.गीत-"तुम बिन"
रतन लाल जाट

यदि तू ना मिलती हमको,

तो हाल कितना बुरा होता?

तुम बिन मैं एकपल भी,

दुनिया में कैसे जी पाता?

इतने सारे ख्वाब मैं,

किसके लिए सँजो पाता?

अपने मन सुन्दर-मूर्ति,

तुम बिन किसकी बनाता?

तुम बिन आँसू की लड़ें कैसे पिरोता?

मेरी श्वाँसें बार-बार नाम जपती किसका?

दुनिया में ऐसी दिवानगी,

तुम बिन मिलती कहाँ?

बड़ा मुश्किल हो जाता,

प्यार का मतलब सीखना।

तुम बिन अकेला,

बेगाना बनकर रहता।।

कैसे बताता? किसी को नाम तेरा।

कि- वो मेरी पिया है, मैं प्रेमी उसका।।

जीवन में खिले हैं फूल।

जिनकी बिखरी हवा मधुर।।

ऐसी मदमस्ती में,

आँचल किसका लहराता?

और यहाँ स्वर्ग-सा नजारा,

तुम बिन मैं कैसे देख पाता?

कौन करता वादें, सात जन्मों के यहाँ।

तुम बिन मैं बोलो, कैसे जी पाता?

223.गीत-"हँसते-खिलते"
रतन लाल जाट

मैंने देखा था तुमको हँसते-खिलते।

हरपल तू लगती एक कली-सी बनके।।

तुझे देखकर मेरी,

इन श्वाँसों को थोड़ी ठण्डक-सी मिली।

ऐसा लगा जैसे,

दुनिया में एक तू अकेली है मेरी।।

हरपल तुम थी, जादू-सी एक परी।

जैसे मेरी आरजू और तू है खूमारी।।

इधर-उधर डोले तू, मन मेरा धड़के।

कानों में सुनायी देती, तेरी ही आवाज है।।

मेरी आँखों में एक सुन्दर-सा कोई चेहरा है।

जो था मेरे अन्दर, फिर वो क्यों बाहर दिखता है?

हरपल तू है मेरी दिवानी।

जिन्दगी में बहार बन आयी।।

तुझे आँखों में बसाकर मैं,

आज बन्द कर दूँ पलकें।

224.गीत-"तुम जैसा ना कोई है।"

रतन लाल जाट

तुम जैसा ना कोई है।

वहाँ भी ना होगा ऐसा रे।।

एक तू अकेली आयी है,

दुनिया में एक दिवानी बनके।

बस, तू ही जैसे मेरी जिन्दगी है।।

मेरे मन-उपवन में तू,

महकी फूल-सी बनके।

खिल गयी कलियाँ,

सारी इस प्यार में।।

करूँगा मैं खोज तुम्हारी

दुनिया का कोना-कोना रे।

चाहत है मुझको तुम्हारी

कभी जुदा ना होना है।।

दिल में आया है एक तूफान बन।

बादल बरसेगा घनघोर गरजकर।।

मेरा गुलशन है तू,

चमन की खुशबू भी तू।

मैं हूँ तेरा प्यासा,

मधुप बनके गुनगुनाता।।

तेरे आगे-पीछे चारों ओर यहाँ-वहाँ।

साथ ना छोड़ूँगा चाहे तू जाये जहाँ।।

हरपल चाहत है, मरके भी ना मटती है।

तुम जैसा ना कोई है, वहाँ भी ना होगा ऐसा रे।।

225.गीत-"प्रेम-शक्ति"

रतन लाल जाट

प्रेम-शक्ति नाम सबसे बढ़कर है।

तोप, क्या बन्दूक? सब हार गये हैं।।

ये प्रेम-भक्ति इस दुनिया में सच्ची है।

इसके आगे खुद भगवान हार गये हैं।।

प्रेम वो ताकत है, जो कभी हारता नहीं।

मौत भी उसके आगे, थोड़ी रूक जाती।।

जो काम फाँसी का डर नहीं कर सकता है।

प्रेम होले-होले वो आसानी से कर देता है।।

प्रेम-नाम अमर है, चाहे दुनिया मिट जाये।

एकपल का रिश्ता, जन्मों साथ निभाये।।

इसकी निशानी अमिट है, सारी शक्ति प्रेम है।

दिल का रिश्ता सच्चा है, प्रेम कभी ना मरता है।।

226.गीत-"तुम आ जाओ"

रतन लाल जाट

तुम आ जाओ,

जीवन में प्यार बनके।

आ जाओ ना,

सारी खुशियाँ ले करके॥

तुम आ जाओ...............।

इस जहाँ बीच मैं अकेला हूँ।

बड़ी भीड़ में तुझे खोजता हूँ॥

दिल से कहता कि-

तन में मेरे बस जाओ।

तुम आ जाओ..................।

तू खिलती एक कली,

मुस्कान है तेरी मीठी।

मैं हूँ धरती का वासी।

फिर तू कैसे मुझको मिली॥

तू स्वर्ग की है एक परी, सोचो।

क्यों मेरे जीवन में आयी, बोलो॥

तुम आ जाओ..................।

एकपल आकर तू बड़ा चैन लुटाती।

थोड़ा-थोड़ा प्यार करके हमें लुभाती॥

मन एक उन्माद है,

जो देखकर जगा तुझे।

अब तेरे में खो जाना है,

क्योंकि सारा संसार तू ही है॥

सच्चे दिल की बात सुन लो।

हमेशा ही चाहा मैंने तुमको॥

अब हम जूदा हैं क्यों?

दिल मिल गयेगये हैं तो॥

तुम आ जाओ.................।

227.गीत-"बड़ी मुश्किल से"
रतन लाल जाट

बड़ी मुश्किल से अपना जीवन।

इस तूफानी हवाओं से ठकराकर।।

आज निखर आया है,

एक फूल-सा खिलके।

जीवन में सुख-दुख का जोड़ा है।

डरके क्यों? हमको हँसके जीना है।।

रात बड़ी अंधेरी है,

राह काँटों से भरी है।

लेकिन चलते जाना है,

मंजिल दूर जहाँ है।।

तेज गर्मी में,

ठिठुरती सर्दी ये।

सब मिलजुलके,

मुझको परखते।।

इस मुश्किलों से,

लड़ा हूँ अकेला मैं।

हँसते-हँसते,

कभी ना हारूँ मैं।।

जिन्दगी में कुछ पल थे खट्टे।

एक नयी आशा के पल थे मीठे।।

ललक है कुछ कर जाने की।

फिर क्यों रूके हम इस घड़ी।।

जीवन-सरोवर में खिलते कमल है।

जब खून-पसीना पानी बन बहता है।।

तन से निकल-निकल पसीना,

सारी गन्दगी और धूल ले गया।

अपनी रोटी खुद मैंने पकायी,

किसी के आगे ना हाथ फैलाया।।

ऐसे ही एकदिन,

बदल गया जीवन।

अपने दिल का राजा मैं।

सुख-दुख दोनों को जीया है।।

228.गीत-“दुनिया से दूर-दूर”
रतन लाल जाट

दुनिया से दूर-दूर, गया था मैं अकेला।

चाहत थी दिल में, किसी को खोज लाऊँगा।।

जहाँ ना था कोई अपना-पराया।

सब दूर-दूर खड़े थे, देखे रास्ता।।

तभी मैंने देखा, किसी को वहाँ।

जो है खड़ा पास मेरे अपना-सा।।

लग रहे थे हम दोनों।

दूर रहकर भी एक हैं मानो।।

सोचा था मन में एक सपना।

चलो, आज जुड़ा है बंधन अपना।।

इस धरती पर

पिछले जन्म के कर्म।

मिलाते हैं,

एक-दूजे को फिर।।

तन-मन के रिश्ते छूट जाते हैं सदा।

छल-कपट के खेल नहीं चलते हैं यहाँ।।

नाम उसका लेते हैं लोग।

जहाँ सत्य और प्रेम का है लोक।।

प्रीत के बंधन ऐसे

कोमल-कोमल तार हैं।

वो नाम अमरता की

एक अजब पहचान है।।

सच्चा दिल, अमर आत्मा।

होता है मिलन इनका।।

229.गीत-"वो दिन था।"

रतन लाल जाट

वो दिन था, जब दिवाली थी।

नौ नवम्बर की, वो शाम थी।।

जब पहले-पहल देखा था मैंने तुमको।

देखते ही सब आ गया समझ मुझको।।

जिस दिन लिखी थी इबारत मैंने, तेरे नाम की।

दुनिया में कहा था किसी ने कर लो पहली दोस्ती।।

वो पुकार तेरे दिल की, मेरे दिल में गूँज उठी थी।

आया था मिलने को मैं,

खड़ी थी तू इन्तजार में।

देखा था तुमको उस वक्त अकेले।

दिल ही दिल में बसा लिया मैंने॥

पल-पल निहारते हुए,

दिल ने तुझको पहचान लिया।

वरना इस दुनिया में,

अब तक मैं अनजाना था॥

काली-काली घनी अंधेरी, वो रात थी।

जब अपनी पहली मुलाकात हुई थी॥

जलते दीप की लौ का, वो उजाला था।

आँखों से बरसते प्यार भरा वो चेहरा था॥

जब देखा था मैंने,

आँखों में आँखें डाल।

तुमको भी मुझको,

कहा था अपना यार॥

इतने दिन बीताये हैं,

मैंने अकेले ही अकेले।

जान भी गवाँयी है,

बिन तेरे ही तेरे॥

खुशी थी मेरे मन में,

बस, तेरा प्यार मिल गया है।

और तू बन गयी, मेरी एक दिवानी।

बस गयी है दिल में, प्यार की निशानी॥

वो दिन था, जब दिवाली थी।

नौ नवम्बर की, वो शाम थी॥

230.गीत-"प्यार करने को"

रतन लाल जाट

प्यार करने को सच्चा दिल होता है।

अब नहीं कर सकता किसी से प्यार मैं॥

इसका मतलब यह नहीं कि-

मैं झूठा और दिल का कच्चा हूँ।

दिल था जो मेरा वो किसी ने चुराया,

जरा, सुन बात पक्की जो मैं कहूँ।।

कहाँ से वो आयी थी?

क्यों मैं संग उसके आया?

ऐसी वो कौन परी है?

और किसने उसको भेजा है?

जीवन में लिखा है, एक प्यार उसी का।

फिर कैसे कर सकेंगे हम प्यार दूजा।।

प्यार करनेवालों से सब प्यार करते हैं।

जो ना प्यार करे, हम उसको प्यार करते हैं।।

231.गीत-"तेरे लिए"
रतन लाल जाट

तेरे लिए ही तो हम दुनिया में जीते हैं।

मरने को भी हैं तैयार, बस हम तेरे लिए।।

जब भी हो जरूरत तुमको,

हँसते-हँसते जान दे देंगे।

बस, तू मुझको इतना-सा कहे।

कि- सच्चे प्यार का जो वादा है।।

वचन के पक्के हैं, सच्ची कसमें खाते हैं।

तेरे लिए जो भी है अपना, सब तेरा है।।

पापी कारनामों से हम डरते हैं।

धोखेबाज लोगों से नफरत करते हैं।।

हम प्यार के नाम पर मर-मिटनेवाले।

जब तक जान में जान है, प्यार हम करेंगे।।

232.गीत-"हँसता है चन्दा"

रतन लाल जाट

हँसता है चन्दा, टिमटिमाते सितारे।

नभ में छाये हैं बादल काले-काले।।

धरती ये सजी-धजी है।

हरी-भरी खूबसूरत लगती है।।

वो छिप-छिपके कहीं अकेले में।

अपने प्रियतम का इन्तजार करती है।।

दिल थोड़ा मजबूत कर।

और चलती श्वाँसों का सरगम।।

आज मेरा साजन आया है।

क्यों रूलाने में मजा आता है?

प्यार मैं करती हूँ, वरना सब बेगाने।

खुशियाँ दूसरों की देख, नहीं अब रोयेंगे।।

खेत-खलिहानों से, जो खुशबू आये।

हवा आकर वो, हमको धमकाये।।

प्यार के फूल देखके।

काँटों में फँस गया भँवरा है।।

आज ये चन्दा, देखकर मुझको,

बादल बीच कहीं छिप गया वो।

वसुधा ने खोजा उसको,

लेकिन रात हो गयी, ना मिला वो।।

धीरे-धीरे टिमटिमाते तारे।

ढुलकाने लगे हैं आँसू अपने॥

रोती-रोती सारी रात वो दौड़ी।
अब बेसूध होकर गिर गयी॥
वो दिवानी, एक सपना देखती।
प्रियतम को पास अपने कहीं॥
उसको चाहे वो पकड़ना।
तभी उठके वो भाग गया॥
तब आँखें खोल देखा उसने।
वो अकेली थी, ना प्रियतम है॥

अब कहने लगी चन्दा को।
बात अपनी दिल में थी जो॥
तेरे बिना सिंगार मेरा।
अधूरा ही धरा रह गया॥
क्यों नींद में आया तू?
अकेली ही क्यों ना तू?
प्यारी-प्यारी बातें सोची,
सारी रात गुजर गयी है।
करते-करते इन्तजार,
अब थक गयी हूँ मैं॥

तभी देखा, पूरब में लाल रंग था।
सूरज हो सवार किरणों के साथ चला॥
अकेली वो खड़ी, उषा की बेला।
उसके सिवाय ना अब कोई था॥
सारे ख्वाब अधूरे,
अब दिल को बेचैनी दे।

233.गीत-"पूरी रात मैं"
रतन लाल जाट

पूरी रात मैं गयी थी कहाँ?

और अब हूँ मैं कहाँ?

सपने में संग उसके,

लिपटी रही थी हरदम मैं।।

अब कैसा ये उजाला हो आया?

सूरज की किरणों ने आ जगाया।।

जगते ही आज मेरे दिल से,

वो एक आह निकली।

मेरे प्रियतम तू कहाँ?

मैं अभी भी हूँ यहीं।।

बताओ ना बात अपनी,

तुमने मुझे कैसे बुलाया?

इतना दूर मैं अकेला,

तेरी ओर भाग आया?

ऐसा वो क्या जादू है?

दिल मेरा नहीं काबू है।

जी मेरा घबराया, नींद से क्यों जगाया?

रहने देते हरदम मुझको, प्रियतम के संग यहाँ।।

कितना चैन मिला था मुझको?

जब मेरे साथ में था वो।।

दिल मेरा भर गया था।

जब प्रेम मुझको मिला था।।

कौन है जो आया था जगाने?

क्यों मेरा सपना तोड़ दिया उसने।।

वो क्या जानता है?

हाल मेरा क्या हुआ है।।

अब हरदम है तड़पना।

और दिल का ये जलना।।

थोड़ी-सी खबर, यदि मुझको चले।

तो मैं जाऊँ संग उसके, अब मन नहीं लगे।।

234.गीत-"कभी ना हम थकते हैं"
रतन लाल जाट

उसकी बातें कर-करके, कभी ना हम थकते हैं।

हरपल उसकी राहें, टकटकी लगाये देखते हैं।।

अपनी आँखें कभी, झिलमिलाये तक नहीं।

मन मेरा मानता है नहीं, कैसे मैं समझाऊँ यही?

समझाते हुए ही रात ढ़ल गयी, अंधेरा छा गया है।।

आँखों से छलकते हैं अश्रु-मोती।

जैसे सावन के बादल और बरसात की झड़ी।।

कभी सपने में देखकर उसको।

नींद कभी ना जगने दे मुझको।।

बैठे-बैठे उसकी बाट जोते हैं।

प्यार की माला दिल ये जपे है।।

कभी वो आकर मेरे भीतर।

धीरे-धीरे लगाये एक अगन।।

वो आग कभी नहीं बुझती।

बस, दिन-रात दिल को जलाती।।

तन मेरा शीतल है।

मन में एक तूफान है।।

कब आये वो, थक गया हूँ मैं?

पास मेरे आकर क्यों तू दूर है?

235.गीत-"मेरी महबूबा"

रतन लाल जाट

मेरी महबूबा, ओ मेरी महबूबा

दिल की तुम बातें मुझे कहो ना।

पास मेरे आओ, धीरे-से बताओ ना॥

मेरी महबूबा, ओ मेरी महबूबा

अधूरी अपने प्यार की कहानी।

सुनने को बेचैन है धड़कन मेरी॥

तू ही मेरी खुशी है,

तेरे बिन ना जी लगे।

तुझमें ही सारा संसार है बसा।

मन भी तेरे आसपास है रमता॥

जहाँ तुम हो, वहीं मेरा प्यार।

जन्मों तक है अपना साथ॥

प्रियतम के संग बातें।

बड़े नसीब से होती है

तू मेरी महबूबा, मैं तेरा दिवाना।

फिर क्यों ये रंग लगे फीका॥

जहाँ तू, वहाँ मैं,

बात मेरी सुनो ना

236.गीत-"हरपल मेरी श्वाँसों में"

रतन लाल जाट

हरपल मेरी श्वाँसों में,

बस तू ही तू है।

एकपल भी ना

कभी दूर रहूँ मैं।।

हरपल, हरदम।

तू ही मेरा जीवन।।

प्यार का लम्हा, पूछ तू जरा।

कर रही है मेरी तेरी दुआ।।

दुनिया में अपना प्यार है।

बस, यही नाम सच्चा है।।

मेरी जुबान, बोले तेरा ही नाम।

आँखें भी देखे सपने, ना कोई काम।।

कहीं मन लगता नहीं।

एकपल तेरे बिन कभी।।

आज बता, वो बात क्या?

जो तू चाहे, मुझे कहना।।

प्यार मेरा, नहीं तेरे बिना है।

एकपल भी दुनिया में ना जिन्दा मैं।।

कह रहा है ये जहाँ,

तुम बिन दिल नहीं लगता।

देखो, आज यहाँ खोजो,

जहाँ दिल की रानी हो।।

तेरा ख्वाब, मेरा सपना है।

तेरी कसम, मेरा वादा है।।

237.गीत-"जीते हैं हम"

रतन लाल जाट

जीते हैं हम, साथ उसके।

अपनी श्वाँसों में, दिन-रात है।।

आज तेरी जरूरत है।

तुझको आना ही है।।

अजनबी राहों से कहाँ जाये?

घने अंधेरे में फिर लौट आये।।

जलती एक बत्ती, दिल में है प्यार की।

बाट जोये उसकी, चाबी दूँ आज दिल की।।

ऊपर है आसमां, नीचे ये धरती।

कोई उठे तूफान, या आये आँधी।।

उस वक्त कोई नजर ना आये।

दूर-दूर तक हमें।।

बस, अकेला मैं बैठकर,

ज्वालामुखी के सिर पर।

जपूँ नाम उसका,

जो है प्यारा।।

आज वो मुझसे दूर क्यों है?

अंगुली से ईशारा कोई जो करे।।

जिसके वास्ते सबकुछ लुटाया है।

अपनों को भी हमने ठुकराया है।।

उसने प्यार नहीं किया।

फिर हमने उसको चाहा।।

कितने दुःखों से लड़कर जीया है?

हर मुसीबत का सामना किया है।।

दिल के अरमान सँजोये,

देखा है एक सपना मैंने।

जलती आग में कूदकर,

उसको दूर छुपाया है।।

238.गीत-“दिल अपना मिलेगा”

रतन लाल जाट

दिल अपना मिलेगा,

धरती पार कहीं अकेला।

ना तन होगा, ना मन,

वो मिटकर होंगे निर्मल।।

आत्मा अपनी धुलकर।

अलविदा ना कभी सदा संग।।

जब मिलन हुआ था एक-दूजे का।

तब मन में प्यास थी एक सपना।।

कहा था दिल ने,

कभी दिवाना मुझको।

सोयी-सोयी आत्मा,

नींद से जाग गयी वो।।

कर लिया विश्वास,

जन्मों तक है साथ।

जुड़ गया बंधन,

तेरे-मेरे अन्दर।।

अब ना टूटे ये धागा।

कभी ना छूटे रिश्ता।।

मन चाहे कुछ भी करे।

दिल अपना हार बैठै।।

तन को है मिट्टी में मिलना।

दिल का मिलन ही है होना।।

दिल अपना मिलेगा,

धरती पार कहीं अकेला।

239.गीत-"ए दुनियावालों"
रतन लाल जाट

ए दुनियावालों,

रोकर भी जीना है।

हँसकर भी जीना है।।

फिर क्यों रोते हो?

हँसना ही जीवन है।।

ए दुनियावालों,

बेखबर हो जाओ।

आये जब मौत एकदिन,

तो हँसकर गले लगाओ।।

पहले से मौत का डर तुमको ना हो।

जीवन में कहीं मृत-सा ना बन जाओ।।

हँसते हुए जीना है।

ये जीवन अनमोल है।।

यह दुःखों का जहांन

फिर भी चेहरे पे मुस्कान।

वही रखता इन्सान है जो

आती हुई मौत से,

जो कभी डरते नहीं।

जीवन की बाधाओं में,

वो कभी रूकते नहीं।।

कभी वो रोते नहीं,

हँसी से ही पहचानो

थोड़ी-सी ये जिन्दगी मिली है।

यहाँ हम कुछ करके जायें।।

ऐसी पहचान दुनिया में छोड़ जाना।

जो सदियों तक तुमको भूले ना।।

तुम्हारी एक हँसी।

दुनिया को हँसना सीखाती।।

कितना अच्छा है यहाँ?

जीवन हँसता-खेलता वो।।

जिन्दगी तो बीत रही है।

फिर क्यों हम रो रहे हैं?

क्यों रोयें हम और किसके वास्ते?

कुछ मिलेगा या वो भी छूटेना है।।

अपना रोना रूलाता दूसरों को।

तुम्हारे रोने से कौन नहीं रोयेगा जो?

240.गीत-"पास मेरे बैठी वो"

रतन लाल जाट

पास मेरे बैठी वो,

झिलमिलाती आँखों से।

न जाने कब से वो?

मुझको देख रही है।

टकटकी लगाये,

बिन नैन झपकाये।।

मैं तो तुझको निहारुँ,

मेरे साजन क्यों रूठा तू।

संग तेरे खेलूँ,

बाँहें डाल डोलूँ।।

तेरे आगे-पीछे फिरूँ मैं,

मेरे पास नहीं तू है।

इस दुनिया का तू,

एक रंग-रूप है।।

जिसके लिए वार दूँ,

अपना जीवन मैं।

ओ सनम, तू मेरी सजना।

मेरी हर चाहत में तू रहना।।

अगले जन्म का साथी है तू

फिर न जाने हम जुदा क्यूँ?

मिलन की बेला ये,

सूनी-सुनी लगती है।।

जब होती है सच्ची बातें,

तो स्वर्ग-सी होती मुलाकातें।

अब ना रोना है,

ना कभी जलना।

प्यार की अग्नि को,

मिलन की याद आ।।

बुझा दे आग ये,

मेरी सजनी हरपल

तेरी ही याद आती है।।

रात के अन्धेरे में,

तेरी सूरत मेरा

कभी पीछा ना छोड़े।

कभी जागूँ मैं, कभी सो जाऊँ।

कभी हँसूँ मैं, कभी रोने लगूँ।।

चाहत मुझे तेरी याद दिलाये।

धीरे-से कहना, अपने दिल को,

क्यों मेरा साजन प्यार कर शरमाये?

ऐसे घुल मिलकर बातें उसकी सुनूँ।।

क्या कहेगा कोई मुझे?

दिल तो उस दिन से,

तेरा हो गया है।।

जब हुआ था मिलन अपना।

तब से वो बात अपनी मानता।।

दिल मेरा बाट जोये,

बस, तेरी राहें निहारे।

सपने में भी

वो तेरे लिए जगता है।।

मिलन की याद कर,

रोना मुझको आता है।

241.गीत-"मत भूलना तू"
रतन लाल जाट

मत भूलना तू,

बीते दिन प्यार के।

पल-पल की यादें,

दिल में जो जिन्दा है।।

जब गँवाया था दिल,

किसी के कोमल हाथों में।

उसके आँचल की हवा ने,

पागल मुझको किया है॥

दिल तेरा बनके लुटेरा,

लुट ले गया दिल मेरा।

अब कब न जाने?

होगा क्या-क्या रे?

नित- नित बनकर एक दिवानी।

तू कितने दिलों को लुटा करती?

ऐसा पागल तेरा आशिक,

मैं तेरा दिवाना हूँ अलबेला।

जन्मों तक प्यार वो,

कभी ना भूल पाऊँगा॥

ऐसे मारना, वैसे फटकारना।

फिर उसको आवारा-पागल कहना॥

चल अपनी राहों पर, चलना अब अकेला है।

कितने दिनों से?

दिल में एक बेचैनी है।

आज न जाने क्यों?

वो शोर मचाये रे॥

मिल गये थे कुछ पल,

नसीब से हुआ है प्यार।

अब ना करूँगा मैं गलती,

कभी ना बनाऊँगा तुझे दिवानी।

पीछे-पीछे मेरे आओगी,

फिर भी मैं ना देखूँगा कभी।

तेरे मिलन की घड़ियाँ बुझा दूँ।

इन्तजार ही एक प्रेम-कहानी भूला दूँ।।

मेरे सीने में जो आग लगी है।

आज वो तेरे दिल में जल उठे।।

तेरी जुबान पे मेरा नाम है।

मेरा जीवन ही तेरा संसार है।।

सारी दुनियावाले,

मेरे संग मिल जायेंगे।

फिर दिन-रात तुझे,

दुःखी कर सतायेंगे।।

ऐसे हालात बन जाये,

जब किसी को दुनिया ठुकरा दे।

तब विश्वास मिट जाये,

प्यार को झूठा मान बैठे।।

प्यार को इतना बुरा मत समझो।

दो दिलों का अटूट मिलन है वो।।

मेरे दिल की पुकार सुना।

फिर उसके बाद करना कुछ।।

चाहे दुनिया हमको छोड़ दे,

लेकिन याद उसकी ना मिटे।

प्यार कर ले, आज ये दिन मिले,

सच्ची खायी है कसमें, पूरे कर वादे।।

242.गीत-"आज ये चाँद"

रतन लाल जाट

आज ये चाँद निकल आया है।

तू कहाँ छिप बैठी इस निशा में।।

आ जा, आज बाहर निकल तू आ जा॥

ये चाँद हमको बुलाता है।
फिर क्यों तू भूल गयी है?
अपने प्रियतम से मिलने,
आ जा, वो तेरी बाट जोता है आ जा।

क्या भरोसा है कल का?
यह चाँदनी फिर होगी।
न जाने कब यहाँ?
रात काली आ जायेगी॥
आज तो पूनम है,
और ये रंगीन चाँदनी।
जो छिटकती धरा पे,
वो बरसती आसमां से घनी॥
कितनी हँसी ये मौज है?
प्यारा के मिलन का,
गजब ये राज है॥
ये शुभ-मुहुर्त अब आ गया है,
कई दिनों के बाद अब तो आ जा।

आसमां से बरस रहा है,
ये अमृत हमको नहलायेगा।
ये चाँद भी कब-से तेरा,
इंतजार करते-करते थक गया॥
मिलने को बेचैन है,
अब रहा नहीं जाता।
गुजरते ये पल ना थमे,
बढ़ रही है ये निशा पुकारती है आ जा।

कैसे आसमां में सितारे जगमगा रहे हैं?

रंग काला रजनी का धुलकर निखर आया है।।

कब-से जुगनू बोल रहे?

तेरे-मेरे मिलन का गीत गाते।।

दिनभर में जलता वो आँगन था।

जो धीरे-धीरे अब ठण्डा हो गया।।

हँसती हुई अपनी मुस्कान बिखरा।।

इस चाँदनी के संग घुलमिल जाये प्रेम-रंग आ जा।

इस आँगन को साँझ ढ़लने से पहले।

सूरज ने सजाया अपनी सुनहरी किरणों से।।

अब गीत गाती ये पवन,

बुला रही है अपना मिलन।

इस मस्ती में हम,

प्यार करें जी भरकर।।

ये लम्हां छुट ना जाये,

बड़े दिनों के बाद मौका है तू आ जा।

आज ये चाँद निकल आया है।

तू कहाँ छिपकर बैठी इस निशा में।।

आ जा, आज बाहर निकलकर तू आ जा।।

243.गीत-"मेरे दिल में"

रतन लाल जाट

मेरे दिल में वो लड़की है।

बाहर निकल ना जाये, डर है।।

कहीं मैं बिन उसके अकेला हो ना जाऊँ।

सपने में भी हरपल उसको ही बुलाऊँ।।

हरदम दिल में बसी रहती है एक वो ही।

जिसको हमने चाहा था और दिल की बातें कही॥

उसकी धड़कन से धड़कन चलती है।

सच्चे दिल से हम कहते दिवानी है॥

आशिक जिसका बन गया मैं।

हाथों में सौंप दिया जीवन उसे॥

वो मेरी श्वासों में,

यादों में भी उसका राज है।

पल-पल हम चाहते,

राहों पे उसके पीछे चलें॥

इस दुनिया में ऐसा स्वर्ग।

जहाँ सच होते हैं अपने कर्म॥

प्यारी बोली जिसकी है,

उस अलबेली के हम दिवाने॥

244.गीत-"चलो, चलें हम"

रतन लाल जाट

चलो, चलें हम।

अब रहा नहीं जाये एकपल॥

बिन तेरे चलना मुश्किल।

तो कैसे बढ़ायें कदम?

अगर तुम हमसे दूर चल दो।

तो रूक जाये जिन्दगी अपनी तो॥

चलो, चलें हम।

अब रहा नहीं जाये एकपल॥

अब ना ठहरूँ मैं यहाँ।

रूकना भी है गँवारा॥

तो सोचो कैसे जीयें?

ये जीवन हम अकेले॥

चलो, चलें हम।

अब रहा नहीं जाये एकपल॥

जाकर उसको चुम ले,

मिले तो गले से लगा लें।

उसमें सारा जहाँ देखे,

अपना तन-मन लगा दें॥

अगर यहीं अपना ठिकाना है।

तो फिर हम क्यों घुमे-फिरे?

मगर अब कौन बताये?

अपने दिल की बातें हमें।

तेरे दिवाना कैसे जी पायेगा?

जब तू हो जायेगी उससे जूदा॥

चलो, चलें हम।

अब रहा नहीं जाये एकपल॥

245.गीत-"सोने के जैसा"

रतन लाल जाट

सोने के जैसा, मुखड़ा है उसका।

लम्बे-लम्बे बाल हैं, रंग सुनहरा॥

जिसका हूँ मैं दिवाना।

चाहे कोई माने या माने ना॥

मैं सूरज हूँ जैसे, वो उसकी किरण है।

जो चमकीली-जगमगाती, यहाँ आयी है॥

चेहरा उसका लगे जैसे सूरज कोई उगा।

काले-काले बाल हैं, घने बादलों के जैसा॥

उसकी अँखियाँ बिजली बनकर चमके।

अश्रु-धारा लगती है, बारिश की बुन्दें॥

बाँहें उसकी नदी के दो किनारे।

उनके बीच बहता जल हूँ मैं॥

देखकर उसकी हँसी कमल-सी।

मन की कलियाँ बिखर गयी॥

ऐसी मेरी आशिकी, सच्ची है यारा।

एक-दूजे के साथ हैं, हमको ना जूदा होना॥

मोती-से चमकते, दाँत है उसके।

मुख में हो एक माला, ऐसे वो लगते॥

उसका हर रूप है निराला।

स्वर्ग से उतर आयी वो यहाँ॥

कर लो मेरा विश्वास,

पूछो, दिल की बात।

अब तो इनकार करो ना,

मुश्किल से प्यार है होता॥

246.गीत-"वापस लौट आये हैं हम"

रतन लाल जाट

वापस लौट आये हैं हम।

कहीं ओर ना लगा मन॥

लम्बे-लम्बे रास्ते, चलकर हम अकेले।

खोजने लगे तुम्हें, मगर तुम-सा कोई नहीं है॥

चाहे हम कहीं भी जायें।

फिर भी याद ना भूल पायें।।

वो कैसा लम्हा था?

तेरे संग प्यार भरा।।

कैसे दिन ढ़लता था और शाम होती?

अब एकपल ना कटता है, फिर कैसे रात होगी?

उसदिन मेरी चाहत तुम थी।

तेरे सिवाय और ना कुछ था बाकी।।

अब अकेले ही घुम रहे हैं।

पता नहीं कब होगा मिलन रे?

अगर मिल जाओ तुम,

तो कभी ना दूर जायें हम।

भले ये दुनिया छोड़ देंगे,

मगर जी ना सकेंगे तुम बिना।।

माँगते हैं रब से, यही एक दुआ।

मिलन के बाद हमें, कभी ना करे जूदा।।

थोड़े-से पल, थोड़ा है जीवन।

लेकिन ना छोड़े हम, कभी तेरा संग।।

मिट जायेगा सारा संसार एकदिन।

फिर भी अमर रहेगा प्यार-ए-दिल।।

वापस लौट आये हैं हम।

कहीं ओर ना लगा हमारा मन।।

247.गीत-"सूरज को पूछो"
रतन लाल जाट

सूरज को पूछो कि-

तुम कितना प्यार करते हो?

अपनी किरणों से।

आसमां की तरफ देखो।

वो इस धरती को

कितना चाहता है?

फिर पूछो हमसे कि-

उस लड़की से तुम

कितना प्यार करते हो?

चाँद को जाकर कहना।

बिन सितारों के तेरी चाँदनी

हसीन ना लगती है क्यों?

वो लड़की मेरे वास्ते,

चाँद-सूरज और सितारा है।

बिन उसके क्या मतलब?

इस दुनिया में जीना है।।

वो लड़की आसमां है,

धरती भी वही है।

अपने लिए वो सबकुछ है।।

एक भंवरा प्यार करता है।

जो काँटों बीच फूलों पर मंडराता है।।

उसकी तरह मेरा मन है वो।

दिन-रात उसमें ही बसा है जो।।

वो मेरी श्वाँसों का गान है।

बस, उसको आँखों में बसाया है।।

मधुर-मधु है नाम उसका।

मेरी जुबां जपती है सदा।।

लम्बी रात गुजरे,

उसकी ही यादों में।

कभी आती सपने में वो।

मेरा प्यार है लड़की जो।।

सूरज को पूछो कि-

तुम कितना प्यार करते हो?

अपनी किरणों से।

आसमां की तरफ देखो।

वो इस धरती को

कितना चाहता है?

248.गीत-"सबकुछ सीखा दिया है।"

रतन लाल जाट

उस लड़की ने हमको,

सबकुछ सीखा दिया है।

प्यार में जीना-मरना,

मरके भी प्यार करना है।।

एक उसको ही चाहा था,

अकेले इस दुनिया में।

सबकुछ भूला दिया था,

बस, उसकी चाहत में।।

यादों में हरवक्त खोये रहना।

पल-पल श्वाँसों में नाम जपना।।

ख्वाब सँजोना, वादे निभाना।

यही अपना एक है सपना।।

रोना उसके लिए,

उसके लिए हँसना है।

ना डर, तो ना गम,

दिल में है वो हरदम।

विरहा की अग्नि में जलना।

आँसूओं की एक माला पिरोना॥

बहरे कानों को, दिल की धड़कन सुना।

सोयी आत्मा अपनी, उसको आज जगा॥

इस नश्वरता के बीच में,

शाश्वत एक अपना बंधन है।

आत्मा का संगम है,

जन्मों तक जुदाई ना मिलन है॥

कौन-कैसा है? हम उनको ना जाने।

सब रंग-रूप है बनावटी दिखावे॥

सच के रस्ते कच्चे हैं,

मगर हमको ना गिरना है।

चाहे कितनी ही मुश्किलें आ जाये,

अपनी कसम निभाना है बिना रूके॥

उस लड़की ने हमको,

सबकुछ सीखा दिया है।

प्यार में जीना-मरना,

मरके भी प्यार करना है॥

249.गीत-"मेरे प्यारे बच्चों!"

रतन लाल जाट

मेरे प्यारे बच्चों!

तुम्हें कभी ना भूल पाऊँगा॥

पहला मुझको पढ़ाने का मौका।

तुम जैसे प्यारे बच्चों संग मिला॥

जो मेरे भगवान है।

सच ही कोई नहीं तुम-सा॥

मेरे प्यारे बच्चों!

तुम्हें ना भूल पाऊँगा॥

जब जाऊँगा स्कूल छोड़ कॉलेज तो,

यादों में हरदम रहोगे तुम मेरे बच्चों!

तब कहूँगा कि- बच्चे कितने अच्छे है?

भोले-भाले और वो सच्चे हैं।

न्यू हैप्पी स्कूल के प्यारे बच्चे हैं॥

क्यों? मयंक, आशीष, राहुल।

हाँ, सर!

तुम्हीं तो देश के कर्णधार हो।

आनेवाले युग के नव-अवतार हो॥

न्यू स्कूल है, मन भी न्यू हैप्पी।

नन्हें-नन्हें बच्चे, जैसे हैं एक मूर्ति॥

बेचैनियाँ सारी मुझसे,

अब दूर हो गई है।

क्यों? रेणु, रिंकू, नाजिश

यस सर!

पहले तुम बात मेरी ध्यान से सुनो।

सोचो-समझो, फिर सभी बतलाओ॥

क्यों? मोहम्मद और सूर्यप्रताप।

जी, सर

सबको बताना है, यही एक पाठ पढ़ाना।

अच्छा टीचर वही है, जो प्रेम से समझाता॥

डाट-फटकार नहीं, मार-पीट है नहीं।

धीरे-से पास जाकर कहो बात अपनी॥

तो मान जायेंगे बच्चे,

फिर कभी ना भूल पायेंगे।

क्या कहा? सर

सुमेरा और शाईस्ता

ध्यान से सुनना।

माता-पिता-गुरू का सम्मान करो।

गन्दी बातें तन-मन से निकाल दो।।

माँ शारदे! यही हमें वरदान दे।

वो हमको ज्ञान की रोशनी दे।।

अपने तन में आकर,

कर दे उसको जगमग।।

यह मेरा भाग है, कर्म सदा साथ है।

बच्चों का मन है, बिना किसी मैल के।।

मन लगाकर पढ़ना,

दुनिया में नाम करना।

तब कितनी खुशी मिलेगी?

मेरी आत्मा नाच उठेगी।।

हँसते हुए नाचते-गाते,

जीवन में तुम मिलते रहो।।

कुछ पढ़ो, आगे बढ़ो।

दुनिया कठिन डगर है,

अपनी मंजिल ढूँढ़ों।।

तुम ही मेरा ख्वाब हो।

यही मन की एक बात हो।।

मेरे प्यारे बच्चों!

तुम्हें कभी ना भूल पाऊँगा।।

250.गीत-"काला-काला चश्मा"

रतन लाल जाट

काला-काला चश्मा,

रंग-बिरंगी पोशाक है।

वो ही मेरी आस है,

उसकी ही प्यास है।।

ये शमियाने की रातें,

और जिन्दगी की शामें।

आ जा, आ जा तू,

तुम बिन कैसे गुजरे।।

सूरज ढ़ल जाता है,

चाँद प्यासा उगता है।

कब देखे उसको,

क्यों हम झूमें?

किसके पास जायें?

और कहाँ हम ठहरें?

उमड़ता प्यार, चढ़ता यौवन।

अकेली है रातें, सताती हैं यादें।।

हम दोनों का मिलन कब हो जाये?

कौन जाने? जन्मों के बंधन जुड़ जाये?

अपना मिलन होगा या

अकेले में गुजारा होगा।

तुम बताओ सजनी,

हमने कर दी गलती।

अब हो गये हम गुलाम,

तो कैसे हो सकेंगे आजाद।

ईश्क में फँस गये,

दिल अपना खो चुके।

अब हाथ अपने कुछ नहीं,

तुम बिन जिन्दगी ना कटती है॥

जो हैं बातें, उनको सच्ची मान।

अपने रिश्ते के कभी ना टूटे तार॥

सारी कसमें और ख्वाब,

बिछुड़के भी रहे याद॥

मिलन भी चैन ना दे।

हर जुदाई हमको गम दे॥

बड़ी मुश्किल से मिलेगा हमको जन्म।

कर्म करेंगे जो सच्चे, तो सुधरेगा जीवन॥

तेरा-मेरा मन अलग है।

जो तुम करे, वो हम ना करें॥

क्या सोचे-समझे आज?

हम साथी हैं, थोड़ा-सा प्यार॥

फिर न जाने कब आसमां ढह जाये?

कौन कहे, हम यहाँ रहें या ना रहें?

आज है, जो राज है।

हाथ में, वो ही अपना है॥

251.गीत-"एक तू, एक मैं"
रतन लाल जाट

एक तू, एक मैं, हम दोनों।

तेरा नाम, मेरा नाम, एक कैसे हो?

फँस गये हम इस प्यार में।

अब मुक्ति ना मिले मरके॥

हम तड़पेंगे, जन्मों-जन्मों तक।

एक-दूजे के लिए हरपल॥

फिर कहीं मिलन होगा,

कुछ पल के लिए अपना।

वो पल भी हमको,

याद रहेंगे बरसों।

प्रीत का बन्धन जोड़ा है,

अपने दिल की कलियाँ ये।

एक गुलदस्ता जो,

प्यार का नगमा है।।

एक बात तुमने कही थी,

आज याद कर लो ना।

पहले तुम बताओ,

मैं तो भूल चुका हूँ।

पुरानी बातें वो,

तुम सोचो-समझो।।

भूल बैठी थी अपना दिल।

सबकुछ गँवा दिया है अब।।

कुछ ना हुआ मालूम,

बात हुई सामने खुल।।

मैंने तेरी आँखों से,

सुनी थी वो बातें।।

जो होठों ने हँसकर,

थोड़ी-सी बतायी है।।

तेरे नाम की एक कहानी है।

इस दुनिया को बताऊँगा मैं।।

यही वो बात थी,

जो पहले मिलन की निशानी।।

हाँ, वो वादा, अब ना टूटेगा जो।

तू मेरा नाम जपते रहना सदियों॥

ना इस दुनिया को कुछ समझा है।

बस, खुद को भूल चुका हूँ मैं॥

यह भी ना मालूम है कि-

कहीं मैं तुझमें तो ना बस गया हूँ।

कैसे तुम भूल गये हो?

नहीं, मैं इतना पागल हूँ नहीं।

सबकुछ मुझको याद है,

तेरी श्वाँसों की सरगम भी॥

मैंने तुझको दिल में बसाया है।

अपना दिल भी तुमको सौंप चुके हैं॥

हूँ मैं हरपल तेरी धड़कन में सुनो।

आँखों में, नींदों में, सपनों में देखो॥

252.गीत-"एकबार टूट गया जो बंधन"

रतन लाल जाट

एकबार टूट गया जो बंधन।

फिर कितना ही मिलायें हम॥

कभी ना होता है संगम।

बन जाती है एक उलझन॥

अब मान ले मेरे सजना,

वो सूरज था, जो ढ़ल गया।

चाँद भी अँधेरी इन

रातों में खो गया॥

अब ना उगेगा,

वो सूरज मेरा।

और ना हम मिलेंगे,

उस चाँदनी में यहाँ।।

अब तो मैं भूल चुकी हूँ।

दिल भी गँवा बैठी हूँ।।

दिल ने ही तो किया प्यार।

हरपल तुमको बनाया दिलदार।।

अब तो मान लिया-

दिल मेरा कच्चा था।

जो तुमसे आकर मिल गया,

और अब दूर भाग निकला।।

अब क्या हाल है?

दिल यह तड़पता है।।

मगर कुछ सोचकर,

दिल सपने सँजोता है।।

रहते हैं अकेले रोते हैं अब।

यादों में हँस भी जाते हैं हम।।

देखकर तुम्हारी सूरत,

मरते हुए भी जी जाते हैं।

अलग मैं तुमसे रहती हूँ,

दिल तुम्हारे में रहता है।।

बात मैं किसी की कहता हूँ,

आवाज तेरे दिल की सुनता हूँ।।

प्यार एक ऐसा नाम है,

जो सदा अमर रहता है।

सबकुछ भूल जाते हैं,

अपने-पराये बन जाते हैं।।

कितने तो मरते और

कितने ही जन्म लेते हैं?

मगर प्यार जो पहली बार करते हैं प्रेमी जन।

वो सदियों तक उसे याद रखते हैं हरपल।।

दिल मेरा अब कोई ले गया।

बस, मुझको वो रोना दे गया।।

जाने-अनजाने में यह क्या हो गया?

किसी को बेचैन कर रात-दिन सताया।।

मेरे मन! तुमने यह क्या कर दिया?

क्यों? किसी से तुमने प्यार किया।।

मुझको कर दिया तूने अभागा।

जो रोये तेरी याद में सदा।।

जिसको हम ना चाहते थे एक पल।

दिल ने उसको ही प्यार किया है हरदम।।

एकबार टूट गया जो बंधन।

फिर कितनी ही मिलायें हम।।

253.गीत-"मेले में चली रे सजनी"

रतन लाल जाट

मेले में चली रे सजनी।

धीरे-धीरे वो झूमती-सी।।

बड़ी मस्ती में, उमंग से।

घुम रही हैं होले-होले।।

वो कुछ लायेगी, तो हम पायेंगे।

वो कुछ चाहेगी, तो हम देख लेंगे।।

चलकर वो जायेगी,

थकान हमको आयेगी।

चक्करी वो झूलेगी,

हवा हमको लगेगी।।

जलेबी वो खायेगी,

पेट अपना भर जायेगा।

घुँघरूँ वो लायेगी,

गीत गायेंगे प्यार का।।

संग उसके सखियाँ है।

वो बड़ी ही प्यारी है।।

बीच वो एक राधा है।

सुनाये बंशी मोहन की है।।

आगे-पीछे सखियाँ चले,

संग वो कली बन लहराये।

मदमस्त है वो परियाँ,

फूल-सी खुशबू है वहाँ।

बीच पराग, संगीत-सी पुकार।

जैसे वो मधु सखियाँ करती गुँजार।।

मुझ दिवाने को आशिकी ने,

प्रीत की डोरी में बाँधा है।

जिसको खींचे वो,

तो झंकार बज उठे दिल में।।

इस गली से उस गली में फिरे।

हर दुकान पर जा वो कुछ खरीदे।।

हाथों में कंगन बजे झन-झन।

पैरों में पायल बजे छम-छम।।

होठों पे लाली है,

प्यार में मतवाली है।

जो भी देखे उसको,

तो दिल अपना खो दे वो।।

मुश्किल हो जाये,

खुद को संभालना रे।

उस दिवानी को दिल चाहे,

तो भला कौन रोक पाये।।

254.गीत-"दिल की धड़कन"

रतन लाल जाट

दिल की धड़कन कुछ कहती है।

सुन लो, इसकी बातें सच्ची है।।

कभी तो हकीकत यह होनी है।

फिर हम सबको याद आनी है।।

जो दिल में एक तूफान-सा।

आज उठ रहा है गुब्बार-सा।।

इसकी बातें याद करूँ,

तो रोना मुझको आये।

अगर भूलना मैं चाहूँ,

तो जी मेरा घबराये।।

दिल गलती कर देता है एकबार।

उसकी सजा मिलती है बार-बार।।

फिर भी हम रस्ता खोज लेते हैं।

लेकिन मंजिल छूट ही जाती है।।

दिल सच्चा है, वो थोड़ा पागल भी।

जो बिन सोचे-समझे, खो जाये कहीं।।

फिर कभी जब हालात बदल जाये।

तो इस दिल को बस रोना ही आये।।

255.गीत-"वो अनजान"

रतन लाल जाट

वो अनजान बनकर आया था।

जाते हुए दिल अपना ले गया।।

वो दिवाना है एक अजब-सा।

गजब था अन्दाज प्यारा उसका।।

पहले वो बातें करता था डरते-डरते।

अब हमको सताता है चुपके-चुपके।।

धीरे-धीरे वो आया।

आकर दिल खो गया।।

अपने दिल और जान।

चले गये उसके पास।।

अम्बर में बादल घुल गये हैं जैसे।

वो दिल में आकर बस गया है ऐसे।।

फूल से खुशबू दूर ना जाये जैसे।

वो मन-उपवन में छा गया है ऐसे।।

अपनी इन आँखों में,

सपने हैं बस उसके।

दिन-रात हम रोते,

गम सताते हैं उसके।।

खुद मर-मिट जायेंगे।

लेकिन उसको ना मिटने देंगे।।

चाहे दिल ये जलता रहे।

वो चमन-सा खिलता रहे।।

आज बिन उसके,

सूना लगे संसार।

कभी ना दिल से जाये,

एकपल उसकी याद।।

जन्मों तक ऐसा कोई

दिलबर ना मिलेगा।

धरती से अम्बर छोड़

जायें जन्नत है जहाँ।।

वो अनजान बनकर आया था।

जाते हुए दिल अपना ले गया।।

वो दिवाना है एक अजब-सा।

गजब था अन्दाज प्यारा उसका।।

256.गीत-"तेरी चाहत में हम"

रतन लाल जाट

तेरी चाहत में हम,

इन्तजार करते हैं हरपल।

बस, हमको दिन-रात,

सताये तेरी ही याद।

ना कुछ मन को भाये।

ना कुछ भी अच्छा लगे।।

अपनों से दूर हम,

खोये-खोये रहते हैं अब।

तुमसे मिलने की आस,

सँजोया है दिल आज।

तेरी याद रूलाती है।

आँखों से आँसू बहते हैं।।

अब ना जी भर रो पाते।

बस, छिप-छिपकर तड़पते हैं।।

अपने हमको पराये-से लगते हैं।

पराये के खातिर हम जान लुटा दें।।

जिन्दा रहना भी मरने से बुरा है।

और मरना तो उसके हाथ में॥

ना कुछ हम कह पाते हैं।

बस, अकेले ही गम सहते हैं॥

तुमसे मिलने को आती है

बड़ी ही मुश्किल।

फिर भी हमको मिलती है,

बेवफाई की किस्मत॥

सारे सपने टूट जाते हैं।

प्यारी-सी दुनिया मारने दौड़े॥

जो अपना प्यारा संसार है।

आज वही हमसे अलग है॥

दिल से हम प्यार करते हैं।

उसके दिल को ना कुछ कहते हैं॥

भले ही वो हमको भूल जाये।

लेकिन हम मरके भी याद रखेंगे॥

अपनी खुशियाँ तेरे आँचल में।

तेरा सपना है जिन्दा मेरे दिल में॥

जो भी आज तू चाहे।

वो हम तेरे नाम कर दें॥

जान हथेली पर, अब ना कोई डर।

मरना है तेरे खातिर, कई जन्मों तक॥

257.गीत-"इतनी बातें, कहनी जो तुमसे"

रतन लाल जाट

इतनी बातें, कहनी जो तुमसे।

समय मिलता, हमको कहाँ?

दिन पल-से, लगते हैं छोटे।

मिलके भी ऐसा लगता कि-

हम नहीं मिल पाये कभी।

बातें पूरी हो कैसे?

इतनी बातें, कहनी जो तुमसे।

दिल ही दिल में जान लो।

अगर मिलना हमसे हो।।

रात को आँखें तू बन्दकर।

तुरन्त होंगे हाजिर हम।।

कैसी हैं ये जिन्दगानी?

हमेशा ही अधूरी है कहानी।

रब को पूछे- कब होंगे?

सपने सच्चे अपने।।

इतनी बातें, कहनी जो तुमसे।

देखते हम रह जाते।

ये आँखें, चेहरा ये।।

धड़कन कभी ना कम होती।

रात को और भी,

गति इसकी बढ़ जाती।।

ऐसा लगता कहीं,

हम मिलेंगे कि- नहीं।

किस्मत हमारी कैसी है?

कितनी रब ने जिन्दगी दी है?

इतनी बातें, कहनी जो तुमसे।

बतियाँ मिली हमको जितनी है।

करना मस्ती खुलके वो काफी है।।

करें चार दिन की बात हम।

जो बरसों तक ना हो कम।।

कड़ी धूप से प्यारी, सुबह की है वो घड़ी।

कब सबके चेहरे खिलते हैं।

पंछी बयां गीत यही करते हैं।।

इतनी बातें, कहनी जो तुमसे।

258.गीत-"प्यार की कहानी"

रतन लाल जाट

आँखों में आँसू देखो इनमें,

प्यार की कहानी एक छुपी है।

चेहरा तुम क्यों देखते?

दिल के अन्दर बस झाँकना है।।

प्यार में अकसर यही होता है।

पहले होती जलन, फिर ईश्क जगता है।।

ईश्क की बातें, समझते नहीं सब हैं।

ईश्क में बाहर कुछ होता है नहीं।

अन्दर ही सब लिखी है कहानी।।

प्यार में नींद ना आये,

जागे भी रहते सोये।

आँखों में आँसू देखो इनमें,

प्यार की कहानी एक छुपी है।

गम भी हमको गम ना लगता।

मगर उसका गम हरपल सताता।।

मालूम नहीं, अपना हाल।

हम उसकी, रखते सार-संभाल।।

दुआ करें उसकी,

चाहे हम हो दुखी।

यहाँ अपना लगे पराया।

पराया भी हो जाये अपना।।

इसके आगे कोई ना जीते।

सबसे बड़ा नाम यही है।।

आँखों में आँसू देखो इनमें,

प्यार की कहानी एक छुपी है।

259.गीत-"तुम हँसते रहो"
रतन लाल जाट

तुम हँसते रहो, हम हँसते रहें।

जहाँ भी तुम जाओ, हम तुमको मिलें।।

प्यार में एक यही चाहत है।

दिल का उपवन कभी ना सूखे।।

हम सींचेंगे अपने खून से।

तो खिलेंगे फूल रंग-बिरंगे।।

दुनिया के गम कभी ना सताये।

लड़ते हुए जान अपनी लुटा दें।।

सच्चा प्यार किया है हमने।

दिल का रिश्ता जोड़ा है तुमसे।।

चाहे दुनिया हम छोड़ जायें।

लेकिन जूदा होना मुश्किल है।।

तुम्हारी खुशियाँ देखकर

मन अपना खुश हो जाये।

यही करते हैं दुआ अब

कोई दुख कभी ना आये॥

तुम हँसते रहो, हम हँसते रहें।

जहाँ भी तुम जाओ, हम तुमको मिलें॥

260.गीत-"तेरे संग हूँ मैं"

रतन लाल जाट

हो तेरे संग हूँ मैं ऐसे छुपा

जैसे चाँद में हो चाँदनी।

किरण में वो रोशनी॥

सागर में गिरती नदी।

आसमां में बादल-सा॥

सूरज का हूँ मैं उजाला।

हो तेरे संग हूँ मैं ऐसे छुपा

जैसे तू खत है, मैं कलम।

जैसे तू तेल है, मैं दीपक॥

जैसे तू खुशबू, मैं चमन।

जैसे तू बसंत, मैं उपवन॥

जैसे हूँ मैं एक कवि,

और तू उसकी कविता।

हो तेरे संग हूँ मैं ऐसे छुपा

हो-२ तेरे संग हूँ मैं ऐसे छुपा-२

लगता हूँ मैं एक बीन, तू सपेरा।

लगता हूँ मैं एक मंदिर, तू रब मेरा॥

लगता हूँ पानी-सा, तू नदियाँ।

लगता हूँ अजनबी-सा, तू जानेजां॥

लगता हूँ मैं माला के एक

मोती की तरह चमकता।

हो तेरे संग हूँ मैं ऐसे छुपा

261.गीत-"सूरज निकला जो"
रतन लाल जाट

सूरज निकला जो डूबने को।

चाँद खिला है वो बुझने को।।

राहें जो बनी हैं, कभी वो मिटेगी।

प्रीत आज जगी है, तो एकदिन जान लेगी।।

इस प्रीत ने हमको जोड़ा है।

कभी टूटता बंधन भी देखा है।।

जिसको देखकर हम हँसते थे।

आज वो ही हमको रूलाये।।

इस प्यार की है, एक अजब कहानी।

जो जन्मों तक, कभी पीछा ना छोड़ती।।

यह जीने भी ना देती है।

मरने से हमको रोकती है।।

अपनी राहों में वो दौड़ाती।

फिर भी ना कुछ कहती।।

रोने वाला वो दिवाना।

अकेला है नहीं यहाँ।।

देख दूसरे को आँखें अपनी पोंछ लेगा।

प्रियतम से बिछुड़कर हो जायेंगे पराया।।

जलती है अंगारों से एक मशाल।

उसके दिल में पल-पल आज।।

रहता है शीतल फिर भी।
इस आग में हिम हो गया पानी॥

कभी डूबते सूरज की किरणों को,
आते हुए लाल-लाल देखा हमने।
वो अपने को रोके है,
फिर भी आज दिल दहके॥
विरह की आग जला गया।
प्यार में एक जादू कर दिया॥
गर्म भाप को ठण्डी हवा बना दे।
वो जलते अंगार को फूल-सा खिला दे॥
आग लगी है जलने को,
प्यार हुआ है करने दो।
जान से प्यारी है वो,
तो जान अर्पित करने दो॥
जीवन है उसमें, वो श्वाँस है।
डरो मत जिन्दगी उसके हाथ में॥
यही तो हो रहा है, होने दो ऐसा ही।
बिरला ही होगा, तेरा वो दिवाना कोई॥

धरती पलटने को, आसमां गिरने को।
खिला है जो फूल, वो कभी मुरझाने को॥
कलियाँ कोमल, काँठों से भारी।
एक दिलरूब्बा, जो रब से बड़ी॥
धूल से मिट्टी, मिट्टी से बना खिलौना।
कलाकार! ये खिलौना, मिट्टी हो जायेगा॥
नित चलते हैं जो खेल।
एकदिन होना है उनको फेल॥
हँसी-खुशी का जमाना।

सारी रात रोये वो बेगाना।।

कर्मों का फल बाकी है क्या?

जो हो गया तू एक दिवाना।।

अब राहें बदल गयी,

मंजिल दूर है नहीं।

इस प्यार में यही,

एक अजब है कहानी।।

262.गीत-“पास तेरे रहता है मन”

रतन लाल जाट

पास तेरे रहता है मन।

फिर दूर क्यों है तन?

मेरे दिल में तू बसी है।

और क्या चाहत बची है?

जो रहती हूँ अकेली।

जैसे मैं एक बेगानी।।

लोग कहते हैं,

वो बिन उसके।

दूर छिपकर,

क्यों रोती है?

इतनी-सी ये दूरी।

कोसों मालूम होती।।

कितने पल गुजरे हैं?

एक-दूजे के संग ये।।

थोड़ी-सी जुदाई है।

जो बेचैन मुझे करे।।

दिल से दिल तो मिल चुके।

फिर क्यों हम हैं अनजाने?

ये प्यार बड़ी मुश्किल से,

होता है कई जन्मों में।

फिर वापस क्यों जूदा होते हैं।

और ये तन भी विदा माँगता है॥

देते रहना दर्शन।

प्यास बड़ी है साजन॥

जो तेरी यादों में,

जीवन अपना गुजर जाये॥

जीवन में तुझको पुकारूँ।

हरपल मैं प्यार करती रहूँ॥

कदम-कदम पर मुलाकात है।

बंधन तोड़ जब हम मिलें॥

263.गीत-"बीते दिन फिर लौट आये हैं।"
रतन लाल जाट

बीते दिन फिर लौट आये हैं।

साजन मुझको रस्ते में निहारे॥

जैसी पहली नजर में उसे देखी थी।

वैसी ही आज मैंने उसको पायी थी॥

उलझे-उलझे बाल हैं।

चेहरे पर मुस्कान है॥

बाहों पर डोले, गुलाबी रंग ओढ़नी।

वो दौड़ी-दौड़ी, पास मेरे आ गयी॥

देखते ही उसको राहें मेरी डगमगायी।

आँखें मिलाकर फिर वो शरमायी थी॥

चेहरे का रंग उड़ गया।
दिल मेरा धड़कने लगा॥
होश उड़ने लगे,
तो कहा धीरे-से।
बीते दिन फिर लौट आये हैं॥

इतने दिन कहाँ गये थे?
तुम्हारी राहों में आँख बिछाके॥
एक अरसा हमने बीताया,
तो यादों ने बहुत तड़पाया।
जब पूरा बरस गुजरने लगा।
तो सपनों में आ तूने जगाया॥
वादे कौन निभायेगा?
कसम कैसे पूरी करूँगा॥
हूँ सामने तेरे आज मैं यहीं।
दुल्हन बनके अधूरे ख्वाब-सी॥

आजा जल्दी से, ये आग बुझा दे।
दिल अब जलने लगे, याद सताये॥
वो प्यार कम ना होने देंगे।
मरके भी एक-दूजे को ना भूलेंगे॥
इसीलिए सारी कसमें और यादें।
आज हमको तड़पाकर रूलाये॥
बीते दिन फिर लौट आये हैं।
साजन मुझको रस्ते में निहारे॥

264गीत-“आखिर ये प्यार”

रतन लाल जाट

आखिर ये प्यार कब तक करता रहूँगा?

क्या ये जीवन ही मैं उसके नाम कर दूँगा?

अलगे जन्म भी

फिर मुलाकात होगी।

तुम इतना एतबार ना करो,

भूल जाओ बातें बीती॥

इस दुनिया को भूल जाऊँगा।

मगर कैसे तुमको भूल पाऊँगा?

हँसते-हँसते दुनिया छोड़ दूँगा।

मगर सपने में भी दूर ना होऊँगा॥

मेरा दिल आज टूटने को,

आत्मा है तुमसे मिलने को।

यदि तुम ना मिल सको।

जीना अपना मुश्किल हो॥

सारी दुनिया बेगानी लगे।

ये प्यार कैसे हुआ?

हमको कुछ नहीं पता॥

कब तूने चुराया, मेरी आँखों का काजल।

दिल अपना मैंने वार दिया है तुझे सनम॥

दिल सौंप तेरे आँचल में।

सौया रहूँ मैं मस्ती से॥

क्या कहती हैं श्वाँसें,

अब ना हम दूर होंगे?

नयन मेरे प्यार तेरा चुराये।

याद तेरी दिल में आग जलाये॥

फिर ना जाने ऐसी क्या बात है यारा?

जो हरकहीं मिलन अपना हो जाता॥

265.गीत-"एक सपना"

रतन लाल जाट

एक सपना, मैंने देखा।

क्या कहूँ, वो कैसा था?

वो सपना नहीं है।

कैसे बताऊँ कहानी ये?

यकीन मुझको है नहीं।

क्यों पास मेरे वो आयी॥

सपने में वो आयी।

आके नींद उड़ायी॥

कैसी थी वो? बताऊँ मैं क्या?

प्यारी-प्यारी आँखें हैं, प्यारी वो सजना॥

जन्मों का साथी, वो प्रेम-दिवानी।

आँखों की रोशनी, मुस्कुराट होठों की॥

देखती मैं उसको रह गयी।

दिवानी मैं उसे ठग गयी॥

मैंने उसके चेहरे पर प्यार देखा।

साथ में वो मुस्कान जिसे पहचाना॥

आजा मेरे पास तू,

दूर कहीं हम जायें यूँ।

ये अनजबी राहें बुलाये हमें।

आज मिलन की रात आयी है॥

बाहों में आकर, सीने से लिपटजा।

वो कहने लगी- क्यों अब तू आया?

एक सपना ये नहीं।

मुलाकात है निराली॥

फिर कब होगा प्यार वो?

जल्दी से दोस्ती कर लो॥

चाहे कोई भी देखे, अब ना डर है हमें।

रोक ना सके, दुनिया से हम दूर जायें॥

अब ना भरो आहें, कोई सुन लेगा।

क्यों? आज दिल मेरा खौल रहा।

फिर कैसे धड़कन ये रोक सकता?

मैं काँप रही हूँ, आज मारे डरके।

दिल तो मजबूत, लेकिन तन नाजुक है॥

आओ, उस पार चले जाये।

यहाँ से वहाँ कोई देख ना पायें॥

बस, तू ही मेरे दिल में समायी हो यहाँ।

वो मधु पीके खो जाऊँ काले-काले बालों में जहाँ॥

ना तुम कभी रूकना।

बस, आगे चलते ही रहना॥

आग जले, तो बरसात करना।

श्वाँसें अंगार उगले, तो ठण्डी पवन चलना॥

ऐसी नींद आये मुझको।

कभी ना टूटे मेरा सपना वो॥

अब छोड़ दो तुम बाँहें मेरी।

अलकें पसीने में भीग गयी॥

तेरे संग है मजा।

रूक मत आगे चलो ना॥

क्यों? ये मंजिल है नहीं।

अब कहाँ चले मेरे हमराही॥

देखो सामने बरसात की है झड़ी।

रूको जरा अभी तो सपना है बाकी॥

यह स्वर्ग कहीं खो जायेगा।

तुम अभी ठहरो जाओ ना॥

266.गीत-"जिन्दगी बदल गयी"

रतन लाल जाट

अब तो मेरी, दुःखभरी जिन्दगी।

बदल गयी, रूत ये चमक गयी॥

ये दुनिया बड़ी प्यारी जो,

लगती है नगन झड़ी वो।

जहाँ जगमग सितारे,

और तुम जैसे हैं प्यारे॥

फिर क्यों करें हम चाहत उसकी?

जो बेगाने बन रहते हैं अब भी॥

ये मौसम, ये हवा।

प्यार की बहारें यहाँ॥

भूली-बिसरी यादें,

आज दिल में जगे।

अब ना आये कभी वो,

दिल में मेरे एकपल को॥

नजरें बदल गयी,

कलियाँ खिल गयी।

अब ना भूलें हम।

कभी ना तुझे एकपल।।

तुम मेरे खास हो।

दिल में एक जान हो।।

कहीं वो सपने में,

गुम हो ना जाये।

इसीलिए आज मैंने,

धीरे-से पुकारा है।।

जो मिला ना कभी,

अधूरे हैं ख्वाब सभी।

आँसू बहाये थे हमने,

लेकिन कोई नहीं अपना है।

कोई ना चाहे उसको,

तमन्ना करूँ अकेला मैं।।

गगन अपना और है सारा जहां।

ये प्यारी धरती दुल्हन-सी लगे सजना।।

सज-धजके वो खड़ी।

आयें हैं हम बनके बराती।।

कर लो प्यार हमसे,

लिख दो नाम अपने।

फिर ना रहे,

सब मिट जाये।

कब रूक जाये,

तेरी-मेरी कहानी ये?

प्यार है सच्चा, जो प्यारा है भगवान को भी।

पल-पल अपने और कई सारी बातें प्यार की।

अब तो मेरी, दुःखभरी जिन्दगी।

बदल गयी, रूत ये चमक गयी।।

267.गीत-"दिल अपना हम किसी को"

रतन लाल जाट

दिल अपना हम किसी को,

कभी ना देंगे, ओ मेरे यारा।

अगर दिल हमने

किसी और के नाम कर दिया तो,

फिर मुश्किल में होगा, ये जीना हमारा।।

दिल देना नहीं दिवाना, दिल लेना है सबका।

मगर कभी किसी का, तू दिल नहीं दुःखाना।।

दिल अपना हम किसी को,

कभी ना देंगे, ओ मेरे यारा

प्यार करना, आसान नहीं है काम।

ये हरकिसी के हाथ का, खेल नहीं यारा।।

दिल है भोला-भाला, वो बड़ा ही प्यारा।

दिल अपना हम किसी को,

कभी ना देंगे, ओ मेरे यारा

दिल देने में डर हमको लगता।

कहीं वो अपने संग कर ना दे धोखा।।

दिल अपना हम किसी को,

कभी ना देंगे, ओ मेरे यारा

दिल किसी को देकर,

चैन एकपल आये ना।

याद सताये दिन-रात,

नींदों में आये वो सदा।।

दिल अपना हम किसी को,

कभी ना देंगे, ओ मेरे यारा

जीना-मरना उसके हाथ।

कोई ना करे ऐसा काम॥

दिल देकर फिर वापस,

लिया नहीं जाता।

दिल अपना हम किसी को,

कभी ना देंगे, ओ मेरे यारा

268.गीत-"आधी रात गुजर गयी थी"
रतन लाल जाट

आधी रात गुजर गयी थी।

चाँद भी डुबने लगा छोड़ चाँदनी॥

फिर भी वो ना मिला मुझको कहीं।

दिल कर रहा था बार-बार पुकार उसकी॥

वो मिल जाये, एक पल को मुझे।

वरना अब ये सितारे भी बुझ जायेंगे॥

तब मैं अकेली ही,

देख रही थी राहें उसकी।

जहाँ वो मिलता कभी,

या मैं खुद इन्तजार करती॥

अब मैं अकेली हूँ।

साथ ना है कोई,

बस मेरा है तू॥

तभी तो कहता है-

प्यार नहीं करता मैं।

जब मैंने उसको देखा,

दिल मेरे प्यार बस गया।

आज छोड़ दिया,

उसने मुझको अकेला॥

प्यार भी उसके साथ,

रहता है छिपकर दिन-रात।

दिल उसको पुकारे कभी,

तो यादों में आ सताये कभी॥

बीते दिनों की सूरत देखूँ मैं।

तो आँखों में पानी आ जाये॥

अब क्या करूँ? मेरे पास नहीं है वो।

जिससे प्यार करता हूँ, मुझसे खफा है वो॥

प्यार तो आज भी जिन्दा है।

मगर दिल में एक चुभता काँटा है॥

गुजर गयी प्यारी रातें।

अब बची है उसकी कुछ यादें॥

वो नहीं चाहता, पुकार मैं करती।

मेरे पिया बोलो ना, मैं मर जाऊँगी॥

मन करता, संग तेरे,

जीवन अपना गुजारे दूँ।

बनके एक फूल,

खुशबू अपनी फैलाऊँ॥

कली-सी बन्द मैं,

वो पास आये तो खिल जाऊँ मैं।

वो मिलने आता, मैं क्या करती?

प्यार था उसका, वो चुरा ले गया कहीं॥

269.गीत-"करता रहूँ प्यार तुम्हें"

रतन लाल जाट

करता रहूँ प्यार तुम्हें,

अब यही कहता हूँ।

कभी ना आये मेरे दिल में,

तेरे सिवा भले ही जहाँ छोड़ दूँ।।

दिल तुझमें ही बसता है।

जीवन तेरे संग चलता है।।

यदि तुम ना रहो प्यार मेरा।

तो जाऊँ तुझे छोड़ मैं कहाँ?

हरपल मेरे दिल की रानी तू।

एक लगती है मेरी जिन्दगी तू।।

करता रहूँ प्यार तुम्हें,

अब यही कहता हूँ

कोई बनके मेरा दिवाना।

कभी ना आये वो बेगाना।।

एक तू ही खुशी है।

जन्नत भी मेरा तू है।।

भले ही मर जाऊँ मैं।

मगर नहीं तुम बिन कोई है।।

जिसको जाकर कह दूँ,

दिल की सारी बातें।

मैं तुम पर जान लुटाता हूँ,

मगर बात ना मालुम है क्यूँ?

सुनता रहूँ बातें,

तेरे दिल की मैं।

हरपल तेरी आवाजें,

मेरे कानों में गूँजे।।

अगर तुम ना मिलो मुझे।

तो मर जाऊँ आज ही मैं।।

अब क्या कहना है?

याद तेरी पल-पल सताये।।

कुछ बात कहना है,

सपने में आकर कह जाये।।

मेरी आँखों में हो तुम।

भले ही रहो मुझसे दूर।।

सपना है एक मेरा।

वो बिन तेरे अधूरा।।

प्यार मैं करता हूँ।

अब यही कहता हूँ

चाहे तुम कुछ भी बात मुझसे मत कहना।

लेकिन मैं तुमसे हरदम प्यार करता रहूँगा।।

तू बोले, उसके पहले ही,

तेरे दिल की बात जान लूँगा।

मालुम नहीं तुमको, ये राज अपना।

सपने में मिलना, दिल को कुछ कहना।।

और आँखों से बात सुन लेना।

दिल अन्दर सबकुछ देख लेता।।

धड़कन मेरी आज बढ़ रही।

रोये तू आँख भर आये मेरी।।

करते रहो प्यार मुझसे,

अब यही कहती हूँ।

270.गीत-"क्या कर लेंगे दुनियावाले?"
रतन लाल जाट

क्या कर लेंगे दुनियावाले?

मेरी पिया का कुछ ना बिगाड़ सकेंगे॥

कर भी क्या सकते हैं वो?

उसका तन है, लुट लेंगे उसको॥

हम क्या कर सकते है?

यही इस दुनिया की रीत है॥

माटी की ये काया,

एकदिन माटी होना।

फिर क्यों हमको डरना है?

क्या कर लेंगे दुनियावाले?

मेरी पिया का कुछ ना बिगाड़ सकेंगे॥

ये दुनिया काम करे बुरा।

छिपकर मारे हम पर ताना॥

मेरी पिया के इस भोले मन को।

भले ही तुम ठग लो॥

मन तो चंचल है,

आये एकदिन झोंका।

तब उसको यहाँ से,

होना है जूदा॥

कर लो ये मौज कुछ दिन।

फिर ना मिलेगा कभी जन्म॥

और हमको नहीं कुछ आशा है।

क्या कर लेंगे दुनियावाले?

मेरी पिया का कुछ ना बिगाड़ सकेंगे॥

उस प्यारी को बहलाया था।

झूठा लालच देकर भरमाया॥

जरूरत अपनी समझकर उसको।

रूलाया, तड़पाया, फिर भी तुम अच्छे हो?

अब मुश्किल तुम्हारा बचना है।

क्या कर लेंगे दुनियावाले?

मेरी पिया का कुछ ना बिगाड़ सकेंगे।।

चार दिन का खेल शेष है बचा।

फिर ये अवसर ना मिलेगा दुबारा।।

कितनी प्यारी, भोली-भाली दिवानी?

जब टूटेगा मन उसका।

और राख कर देंगे काया।।

फिर अकेले आयेगी साथ मेरे।

चलकर उसकी अमर आत्मा ये।।

क्या कर लेंगे दुनियावाले?

मेरी पिया का कुछ ना बिगाड़ सकेंगे।।

वो इन हैवानों को,

अंत समय में शाप देगी।

अपनी सरलता पे बार-बार वो,

जी भरकर खूब रोयेगी।।

तब उसकी आत्मा धूल।

माँगेगी रब से मेरा संग।।

और वो करेगी दुआ।

सदियों तक ना हो जूदा।।

एक-दूजे की बाट जोयें।

कभी ना अपना दिल टूटे।।

अगले सात जन्मों,

अपना साथ पक्का हो।

उसके कर्मों का अधभागी,

मैं हूँ सजा भोगने को।।

आपस में एक हम।

भले ही अलग अपने तन।।

लेकिन चिर–रिश्ता है।

दिल माँगे दुआ आपसे।।

क्या कर लेंगे दुनियावाले?

271.गीत-"तुम जैसे प्यारे"
रतन लाल जाट

तुम जैसे प्यारे,

दुनिया के नजारे।

मेरी जान तुमको,

ये दिल पुकारे।।

ये ठण्डी-ठण्डी हवाएँ।

बादलों के बरसते धारे।।

हरपल यहाँ मस्ती है।

गीत-बहारों के सपने।।

हर एक राह के किनारे।

गगन तक जा सीढ़ी है।।

सब ठौड़ है इस जहाँ में।

प्यार के नाम पर भरी-पूरी है।।

मेरी जान तू दिल मेरा।

पुकारे तुमको दिन-रात हमेशा।।

तेरी प्यारी यादें,

मेरे दिल को रूलाये।

कहाँ तू जाकर छिप गयी?

जाऊँ मैं कहाँ? बताओ जान मेरी!

जहाँ तू है, वही मैं।

देखो, दिल की आँखों से।।

धरती से आसमां।

सब ठौड़ है जहाँ।।

करूँ मैं तेरी खोज बार-बार रे।

चाहे कई जन्म मेरे गुजर जाये।।

तुम जैसे प्यारे,

दुनिया के नजारे

272.गीत-"एक प्यारी थी"

रतन लाल जाट

एक प्यारी थी, जिसका मैं दिवाना।

दुनिया में था उसका मैं पहला यारा।।

वो मेरी जान और उसका मैं पिया।

रानी कहूँ या अब उसको राधा।।

जब वो नन्ही-सी एक बाला थी।

बड़ी ही प्यारी फूल-सी लगती थी।।

कितनी सच्ची थी वो?

जैसे पावन मूरत हो।।

उसके जैसा प्यारा,

इस दुनिया में कोई ना।

फिर कहाँ जाये हम बता?

दिखे ना कहीं रंग उसका।।

उसके आँचल में खिलते हैं।

फूल कई रंग-बिरंगे।।

जो सबको बड़े प्यारे हैं।

धरती के सुन्दर नजारे।।

बातें उसकी प्यारी थी सदा?

जैसे कोई अमृत से भरी घटा।।

मेरी पिया! एकदिन तूने।

कहा था यार अपना मुझे।।

बस, चाहत थी यही तेरे दिल में।

मेरे सिवाय ना कोई और है।।

आँखें मिल जाये अपनी सजना।

जब हम लगाये टकटकी रोजाना।।

जन्मों तक खायी है कसमें।

कभी ना निशा काली हमको घेरे।।

धड़कन का एक-दूजे के संग मिलना।

जैसे चाँद-सूरज एक साथ उगे हो यहाँ।।

273.गीत-"झूक गई दुनिया"
रतन लाल जाट

झूक गई दुनिया,

तेरे आगे झूक गई।

छिपकर वो दूर रहा,

नजरों से दुनिया की।।

आज झूक गया,

खुद अपने सामने कहीं।

झूक गई दुनिया,

तेरे आगे झूक गई।

मेरे रब्बा! कोई ना रहेगा।

तेरी नजरों से बचके यहाँ।।

आज वो कह रहा,

कान पकड़ अपने।

कर रहा है दुआ,

तेरे चरणों में।।

एकपल में भूल गया,

वो करना शैतानी।

झूक गई दुनिया,

तेरे आगे झूक गई।।

सारे पाप आ गये हैं नजर।

अब है विनाश भी निकट।।

हमको दे गया दिल अपना।

जाकर वो रब से मिल गया।।

कहता है अब,

माफ करो कर्म।

कर दूँ सब,

आज मैं अर्पण।।

सबको मुक्ति दे।

सद्ज्ञान भर दे।।

सच्ची बातें जरा,

कह दूँ मैं भली।

झूक गई दुनिया,

तेरे आगे झूक गई।

नेक राह पर चलें।

हर कदम भरोसा करें।।

हार ना मिले।

ना कोई हमें मात दे।।

आज तुमने मेरे

दिल की सुन ली।

झूक गई दुनिया,

तेरे आगे झूक गई।

274.गीत-"देख लो, दुनिया के ये रंग"
रतन लाल जाट

देख लो, दुनिया के ये रंग,

कितने बदल रहे हैं हरपल?

कब लहराये खुशबू पवन?

कब सूख जाये फूल-रंगीन?

रे भँवरे! तू कितना डगमगाता?

मिला है तुमको वो मधु कहाँ?

अब कभी ना गुनगुनाना।

कोई ना तुझको यहाँ बुलाता।।

फिर क्यों आज मन में हलचल?

देख लो, दुनिया के ये रंग।

कितने बदल रहे हैं हरपल............।।

ना करना किसी पे यकीन-विश्वास।

कभी हो ना जाये किसी से प्यार।।

सुन ले, मेरे दिल की बात।

सोच-समझ इसको, मेरे यार!

कब चल दे बहार-ए-बसंत?

देख लो, दुनिया के ये रंग।

कितने बदल रहे हैं हरपल............।।

275.गीत-"मन तो कहीं फिरता है।"
रतन लाल जाट

मन तो कहीं फिरता है,

तुझको ये पागल करता है।

इसकी कोरी बातों में,

तू क्यों फँसता है?

आत्मा तेरी जल जायेगी,

दर-दर तू ठोकर खायेगा।

तेरे मन को ये खबर नहीं,

चलना है तुझको अकेला।।

अनगिनत हैं रस्ते,

मंजिल ना जाने कहाँ है?

कोई ना तेरे साथ आये,

तन जलके तड़पे आत्मा रे।।

जैसे कोई पंछी है,

गगन में फिरता।

उसको ना खबर है,

कहाँ अपना बसेरा?

आत्मा की बात सुन,

कहेगी काम बुरा ना कर।

बुरे कर्मों का फल,

सजा देता है दिल।।

वो तो भोगना है,

जो हमने किया है।

अब रोने से कुछ नहीं है,

आगे तुम चलना संभल के।।

छुटता नहीं, भूलता नहीं,

पल-पल रहता हिसाब।

मरके भी शेष रहता नहीं,

जाओ कहाँ? मिटे किताब।।

आँखें खोल तू कदम बढ़ा।

रस्ता देख चुभ जाये ना काँटा।।

तन-मन को रख धूला रे।

आना ना मन की बातों में!

276.गीत-"वो मुझमें आकर बस गयी।"
रतन लाल जाट

वो मुझमें आकर बस गयी।

जैसे एक फूलवारी खिल गयी।।

आज आकर वो रागिनी।

कंठ-सुरों में मेरे गूँजी।।

कहीं भी मुझको ना मिला।

तुम-सा कोई दिलदार यहाँ।।

पिया में मेरा जिया है।

श्वाँसें उसकी सरगम है।।

ऐसी कौन है वो दिवानी।

जो मिलके मुझको रूलाती।।

अब पास मेरे आना।

प्रेम करना सीखाना।।

फिर दूर कभी ना।

मुझमें आकर बस जाना।।

आँखों में देखा है रूप वो।

याद करे दिल भी उसको।।

हम देखते हैं कुछ सपने।

फिर विरह की आग क्यों जले?

अपने आप में कहानी।

कहीं और ऐसी ना देखी थी॥

नाम तेरे गाऊँ,

संग तेरे जीऊँ।

हरदम तुझको पुकारूँ,

बोल मेरे पिया तू॥

पता है मुझको नहीं,

जिन्दगी ये कैसे चल रही?

277.गीत-"मेरी पिया किसी घड़ी तुम"

रतन लाल जाट

मेरी पिया किसी घड़ी तुम।

ऐसा हाल में मुझको ना मिल॥

कैसे देखूँ मैं तुमको रोते-बिलखते?

ऐसा तो कभी सोचा ना था सपने में॥

दुनिया में हरपल मैंने,

तेरे लिए जीया है।

अपने सुख का सागर ये,

तेरे लिए बहाया है॥

बस, एक तू ही मेरा जीवन।

मेरी पिया किसी घड़ी तुम।

ऐसा हाल में मुझको ना मिल॥

कह दूँगा मैं इस दुनिया को।

कभी कुछ मत कहना उसको॥

उसके लिए मैं सब करने को।

खड़ा हूँ अकेला गम सहने को।।

अब इस दुनिया में,

उसके जैसा ना कोई है।

वो मिलना है बहुत मुश्किल।

मेरी पिया किसी घड़ी तुम।

ऐसा हाल में मुझको ना मिल।।

दुःख है तुमको किस बात का?

तुझ पर मैं कर दूँ जान फिदा।।

बोलो, मेरी पिया!

तुम बिन तड़पे जिया।।

मेरे दिल की धड़कन भी।

कुछ हलचल आज करती।।

अपने सारे सुखद सपने,

कर दूँ अर्पण तेरे आँचल में।

आने देना तुम मेरी तरफ,

इस दुनिया के सारे गम।

मेरी पिया किसी घड़ी तुम,

ऐसा हाल में मुझको ना मिल।।

278.गीत-"इतनी मुझको याद सताती"
रतन लाल जाट

इतनी मुझको याद सताती।

आँखों में तस्वीर है तुम्हारी।।

जो न जाने कब रूला दे?

अगले ही पल वो हँसा दे।।

वो धीरे-से पास आकर मेरे।
कानों में कुछ कह जाती है।।
ऐसे हँसती है, जैसे चाँदनी।
मधु-मुस्कान खिलते फूल-सी।।
इतनी मुझको याद सताती.........

नींदों में आये वो,
जब रात हो आधी।
अपने तन-मन में,
एक आग जलाती।।
इतनी मुझको याद सताती.........

उसकी प्यारी-प्यारी बातें।
और छुप-छुपके हुई मुलाकातें।।
कभी उसका झगड़ना।
झगड़के फिर मुस्कुराना।।
उसके बाद वही कहानी।
इतनी मुझको याद सताती.........

हरपल जिसको चाहते।
करते उसकी ही बातें।।
नाम तुम्हारा मैं जपता।
यादों में दिन-रात रहता।।
दिल में हरघड़ी, पुकार है तेरी।
इतनी मुझको याद सताती.........

279.गीत-“लेकर क्या आये हैं?”

रतन लाल जाट

लेकर क्या आये हैं?

कुछ नहीं, कुछ नहीं।

आत्मा अपनी समायी है,

इस तन में जो है मिट्टी-मिट्टी।।

यहाँ एक उपवन है दुनिया।

हमको मालिक ने बीज बनाया।।

जब बीज उग आये तो।

थोड़े दिनों के बाद है पौधा वो।।

सुन ले-२,

मेरी बात है अलबेली!

लेकर क्या आये हैं?

कुछ नहीं, कुछ नहीं।

फिर उसके बाद खिलते हैं,

यहाँ पर फूल रंग-बिरंगे।

उनकी खुशबू और मधु वो,

सब यहीं बिखर जाते हैं।।

लेकिन चंद दिनों की है,

अपनी कहानी-२।

लेकर क्या आये हैं?

कुछ नहीं, कुछ नहीं।

उस फूल का अंत समय आये तो,

मुरझाके सूख जाता है वो।

फिर यहीं-कहीं मिट्टी बन जाता,

और उसका बीज अंकुर बन आता।।

फिर वापस शुरू हो जाये,

वही कहानी, वही कहानी।

लेकर क्या आये हैं?

कुछ नहीं, कुछ नहीं।

यही गति है हम सबकी,

दुनिया एक वाटिका-सी।

जहाँ एकदिन फूल खिलते हैं,

फिर वापस वो सूख जाते हैं।।

यहीं से वो खुशबू मिली है,

तो यहीं पर वो फैल जायेगी।

लेकर क्या आये हैं?

कुछ नहीं, कुछ नहीं।

हम आये हैं बीज बनकर,

तो जाना है एकदिन उड़कर।

कुछ लिया है तो देना भी,

यहाँ रहती है यादों की निशानी।।

अपने कर्मों से-२

फले-फूले ये धरती-ये धरती।

लेकर क्या आये हैं?

कुछ नहीं, कुछ नहीं।

280.गीत-"आ जा तू मेरे साथ"

रतन लाल जाट

आ जा तू मेरे साथ-साथ, ओ यारा!

डरना है क्या? यदि दिल अपना है सच्चा।।

अगर मन में कुछ पाप है नहीं।

तो फिर दुनिया क्या कर लेगी?

बनती-बिगड़ती है दुनिया।

सच को झूठ कहती दुनिया।।

अपना कोई लाख बुरा हो।

फिर भी हमको प्यारा लगता वो।।

यही सोच करती है नाश अपना।

आ जा तू मेरे साथ-साथ, ओ यारा!

जब कोई दुश्मन काम करे भला।

मगर हमको वो फूटी आँख नहीं सुहाता।।

दुनिया की रीत है अट्टपट्टी।

बुरे के साथ रखे सब दोस्ती।।

यदि कोई मिल जाये सच्चा साथी।

तो हम उसके साथ करते हैं बेवफाई।।

फिर भी कहते हैं, रिश्ता है प्यारा।

आ जा तू मेरे साथ-साथ, ओ यारा!

अब दुनिया को बदलना है,

जैसे को तैसा करके दिखाना।

भले ही मौत हो सामने,

लेकिन सत्य को जीत दिलाना।।

बस, यही काम हमको करना।

आ जा तू मेरे साथ-साथ, ओ यारा!

डरना है क्या? यदि दिल अपना है सच्चा।।

281.गीत-"दिल का लगाना"

रतन लाल जाट

किसी एक पर दिल का लगाना।

कहाँ तक है सच? इतना बताना।।

किसी एक पर हम ठुकरा दे सारी दुनिया।

सोचो, उस दुनिया का इसमें कसूर है क्या?

दुनिया में कितने ही दिल से हमको चाहते?

फिर क्यों हम बेवफाई उनके संग करते?

किसी ने अपने साथ किया है छल।

मगर हमको ना करना किसी से छल।।

दिल अपना टूटा, यह दर्द हमने सहा।

भला क्यों हम देंगे? किसी और को ऐसी सजा।।

किसी एक पर दिल का लगाना।

कहाँ तक है सच? इतना बताना।।

बगिया में कोई सूख जाये फूल।

आसमां से सितारा हो जाये टूटा।।

फिर भी माली ना रोता है।

और ना रात को अंधेरा है।।

किसी दिन माली बगियाँ में,

नये-नये फूल उगा जाये।

आसमां में घुमने को,

कहीं से चाँद निकल आये।।

कभी ना हमको खुद टूटना।

टूटे को जोड़ने की कोशिश करना॥

किसी एक पर दिल का लगाना।

कहाँ तक है सच? इतना बताना॥

282.गीत-"दिन बचपन के"

रतन लाल जाट

दिन बचपन के, कितने हैं वो प्यारे?

संग टोली के, उड़ना पँख पसारे॥

कच्चा है तन,पक्का अपना मन।

कोई ना है गम, खुश यहाँ पर हम॥

जो कुछ भी मिल जाता है।

वो जी-जान से प्यारा है॥

पराया कोई नहीं, यहाँ सब अपने हैं।

दिन बचपन के, कितने हैं वो प्यारे?

दुनिया की नजरों से,

अलग अपनी दुनिया है।

दुश्मन की भी दया के,

पात्र हम बन जाते हैं॥

लाख गलती करें, मगर कोई सजा नहीं है।

मन की चाहत कोई शेष नहीं अधूरी है॥

दिन बचपन के, कितने हैं वो प्यारे?

मम्मी-पापा, बड़े भैया और बहिनां।

दादी-नानी के संग मामा-चाचा॥

कोई ना कोई तो हमको प्यार खूब करता।

सबकी आँखों के हम हैं एक सितारा॥

गोद में छिपके, गहरी नींद सोना है।

पीठ पर चढ़के, दूर कहीं जाना है॥

दिन बचपन के, कितने हैं वो प्यारे?

उंगली थाम चलना, किसी हाथ से खाना।

रब रहता है बीच, अपने हरपल ही यहाँ॥

और यहीं पर जन्नत है, कोई जीकर तो देखे।

दिन बचपन के, कितने हैं वो प्यारे?

283.गीत-“चली-चली, ओ हवा चली”

रतन लाल जाट

चली-चली, ओ हवा चली।

एक सन्देशा लेकर वो चली॥

ठण्डी-ठण्डी धीरे-धीरे।

बड़ी दूर चलकर आयी है॥

बात वो अपनी कहती।

सबके दिल को छू जाती॥

खड़े हैं हम पास उसके।

होश अपने ना उड़ जाये कहीं॥

चली-चली, ओ हवा चली

कुछ भी समझ ना आये।

क्यों आँधी-तूफां संग उसके?

कोई यारा हमको भी बतलाये।

वो क्या सन्देशा लेकर आयी॥

चली-चली, ओ हवा चली

284.गीत-"क्या खिलौने बनाये हैं?"

रतन लाल जाट

मेरे बनमाली भगवन्!

क्या खिलौने बनाये हैं?

जो रूप तुम्हारे, नाम तुम्हारे।

वो नन्हें-मुन्ने बच्चे हैं।।

भोला-भाला उनका बचपन है।

मेरे बनमाली भगवन्!

क्या खिलौने बनाये हैं?

सच्चा उनका मन,

औरों को दे वो आनन्द।

कहीं अकेले हँसते हैं।

कहीं औरों को खिलाते हैं।।

मेरे बनमाली भगवन्!

क्या खिलौने बनाये हैं?

धूप में भी वो ना रूके।

बरसते पानी में नहाये।।

बैर-भाव कभी ना रखे।

सबको अपनों-सा समझे।।

मेरे बनमाली भगवन्!

क्या खिलौने बनाये हैं?

रोक ना सके उनको कोई दीवार।

सारे गम भूला दे उनका प्यार।।

जो भी मिलता उनको आपस में बाँट खाते।

बिना बिस्तर वो चैन की नींद सो जाते।।

मेरे बनमाली भगवन्!

क्या खिलौने बनाये हैं?

मार खाकर वो रोते हैं।

अगले ही पल मुस्कुराते हैं।।

भूख-प्यास कभी ना सताये।

मेरे बनमाली भगवन्!

क्या खिलौने बनाये हैं?

उनके आगे हार जाये।

कभी ना उनको जीत पाये।।

उनके संग मुझको घुलने दे।

भले लघु जीवन मिले।।

मगर जूदा ना होऊँ उनसे।

मेरे बनमाली भगवन्!

क्या खिलौने बनाये हैं?

वो नैया है समन्दर में।

उनके बल पर सब तर जाये।।

वो ही सत्य इस संसार में।

मेरे बनमाली भगवन्!

क्या खिलौने बनाये हैं?

285.गीत-"ऐसा जादू"

रतन लाल जाट

ऐसा जादू आज दिखाया,

जादूगर! तूने इन हाथों से।

चमत्कार कर दिया,

बना दी कई तस्वीरें॥

बदल गई दुनिया,

सबकुछ बदल गया है।

सबको एक ही पाठ पढ़ाया,

धरती से आसमां एक ही राहें॥

ऐसा जादू आज दिखाया,

जादूगर! तूने इन हाथों से।

कंकड़-पत्थर बिछाकर

कर दिया रास्ता सुगम।

राग सुनाये ऐसा तू

दिन-रात गुनगुनाये यूँ॥

कभी सोचा ना होगा किसी ने।

ऐसा जादू आज दिखाया,

जादूगर! तूने इन हाथों से।

कितने ही दिलों में तेरा नाम बसा है?

समझ ना पाया कोई ये क्या जादू है?

ऐसी क्या चीज है?

जो ना बनायी हो तूने॥

ऐसा जादू आज दिखाया,

जादूगर! तूने इन हाथों से।

बदल गयी जिन्दगी,

नयी राह बन गयी।

फिर भी ना बदल पाई,

आज भी मंजिल अपनी।।

कैसा ताना-बाना बुना?

क्या रूप बनाये तूने।

ऐसा जादू आज दिखाया,

जादूगर! तूने इन हाथों से।

प्यार वो करते हैं,

जिसको ना देखा सपने में।

चंद-दिनों का नहीं बंधन ये,

जब तक धरती-अम्बर है।।

ऐसा जादू आज दिखाया,

जादूगर! तूने इन हाथों से।

286.गीत-"एक तू ही"

रतन लाल जाट

एक तू ही, मेरा सब है।

जितना आसमां, धरती के लिए।।

कभी ठण्डी बनके तुम रहो।

कभी अपना रंग बदल देती हो।।

करता हूँ तुम पर भरोसा।

तुम बिन और नहीं है दूजा।।

कभी ना कम हो प्यार अपना।

यही मेरे दिल का एक अरमां है।

एक तू ही, मेरा सब है।

जितना आसमां, धरती के लिए॥

मेरे जीवन में, कभी आये आँधी।

कभी सूरज-सी फैल जाये रोशनी॥

फिर क्यों ऐसा है?

अनजाने हम एक-दूजे से॥

एक तू ही, मेरा सब है।

जितना आसमां, धरती के लिए॥

क्या कहूँ तुमको?

देख ले, तू इस दिल को॥

सारा ये जहां हमको,

तुम बिन जैसे अधूरा हो॥

कभी हम खुशियों में,

गुम हो जाते हैं।

कभी हम तनहाई में,

अकेले महसूस करते हैं।

एक तू ही, मेरा सब है।

जितना आसमां, धरती के लिए॥

कहीं ऐसा ना हो मेरी जानेजाना॥

मुझको तो बस तेरा ही रूप प्यारा॥

सागर जितना गहरा है।

दिल अपना सच्चा है॥

आकर उसमें खो जाती है।

जाने कितनी वो नदियाँ है?

एक तू ही, मेरा सब है।

जितना आसमां, धरती के लिए॥

287.गीत-"दुनिया के मालिक"

रतन लाल जाट

दुनिया के मालिक, हम दास हैं तेरे।

तेरी शरण में हमको, पनाह मिल जाये॥

सुबह उठ करें दर्शन।

मन में रखें हरपल॥

बेकार है तुम बिन अपना जीवन।

कभी भूल ना पायें एकपल॥

तुम्हारे लिए सब जन एक हैं।

दया के सागर हमको तार दें॥

सबके मन की पुकार सुन ले।

दुनिया के मालिक............

तुम हो नीर, हम हैं मीन।

तुम हो धीर, हम हैं अधीरा॥

आकर हमको विश्वास दो।

अपना भव-सागर पार हो॥

सात लोक, चौदह भुवन हैं तेरे वश में।

दुनिया के मालिक..............

तुम्हारे नाम से, मरते को जीवन मिले।

तुम्हारे हाथ से, पापी का पाप धूले॥

सबसे बलवान हो तुम।

सबसे दयवान हो तुम॥

इन चरणों में अपना।

अर्पण है जीवन सारा॥

तुमसे दूर ना कभी हम रह पायें।

दुनिया के मालिक...............

288.गीत-"दीपावली! दीपों का त्योहार"

रतन लाल जाट

दीपावली! दीपों का त्योहार।

मिले सबको, खुशियों का उपहार॥

अज्ञानता मिटाओ माँ!

नयी ज्योति जलाओ माँ!

हर अंधकार को, कर दे जगमग।

हर इन्सान को मिले सुखद जीवन॥

मंगलमय हो सारा संसार।

दीपावली! दीपों का त्योहार.......

दानवता का अंत हो।

मानवता की जीत हो॥

सत्य-धर्म की जय-जयकार हो।

इस धरती पर पापों का विनाश हो॥

आये सुख-चैन और प्यार।

दीपावली! दीपों का त्योहार.........

चारों ओर जगमग नजारा।

खुशियों के मारे हरदिल झूम रहा॥

अपने-पराये का भेद भूल।

सब मिल रहें गले खूब॥

धन्य है माँ ! तू हमको दे वरदान ।

दीपावली! दीपों का त्योहार.........

289गीत-"दीप तू! जल-जल-जल"

रतन लाल जाट

दीप तू! जल-जल-जल

कर दे सबको रोशन-रोशन।

सारे दिल हो जायें, जगमग-जगमग॥

जलें हम, दीप बन।

मिटे अंधकार, फैले प्रकाश।

यही अपना धर्म,

यही करना कर्म।

दीप तू! जल-जल-जल......

दूसरों को जीवन, मिलें सुख-चैन।

हर बुराई चीरकर, पुण्य-पताका पहाराकर।

जीना हमको औरों के खातिर

अपना कुछ नहीं, परहित है सब।

दीप तू! जल-जल-जल......

अपना जलना सबको शोभा दे।

अपना मरना सबको रूला दे॥

सब दीप से प्यार करें।

सब दीप से फले-फूलें॥

दीप-सा है जीवन, बुझ जाये कब?

दीप तू! जल-जल-जल...........

290.गीत-"सारी-सारी रात जगकर"

रतन लाल जाट

सारी-सारी रात जगकर।

दिल में तेरे ख्वाब बुनकर॥

अकेले ही हँसते हैं दिलबर!-२

ओ-२ कहीं देख ना ले,

कोई हमें छिपकर॥

दूर रहकर भी दिल के पास हो।

सहज होकर भी सबसे खास हो॥

तुम मेरी एक दुनिया हो।

जहाँ सिर्फ तेरा ही बसेरा हो॥

मगर ये ना किसी को है खबर।

सारी-सारी रात जगकर..........

आँखों में तुमको बसाया है।

नीन्दों में तुमको ही चुराया है॥

तेरे लिए जग सारा छोड़ा है।

अब ना हमको अलग रहना है॥

जीत लेंगे दुनिया हम लड़कर।

सारी-सारी रात जगकर……….

तेरे संग जीना-मरना।

सबकुछ सहन करना॥

तुमसे ना जूदा होना।

चाहे नरक में हो बसेरा॥

यही कहा है हमनें कसम खाकर।

सारी-सारी रात जगकर……….

291.गीत-"कैसे मैं जीता हूँ?"

रतन लाल जाट

कैसे मैं जीता हूँ?

कैसे वो जीती है?

उसकी याद में रोता हूँ।

मेरी याद में हँसती है॥

कैसे मैं जीती हूँ?

कैसे वो जीता है?

जैसे मैं तेल-बात्ती हूँ।

जलता वो दीपक है॥

मेरी तड़प, उसकी थिरकन।

मेरी धड़कन, उसकी सरगम॥

मैं अकेला, वो मस्तानी।

मैं इन्दु-बाला, वो चाँदनी॥

हाल हम दोनों का लगता है यूँ,

जैसे कि- ये कहानी अलबेली है।

कैसे मैं जीता हूँ............

कैसे मैं जीती हूँ............

ख्वाब उसके सँजोता

सपने उसके देखती।

आँखें मदहोश करती है

बातें हरपल लुभाती॥

आज मैं कह दूँ,

हकीकत यही मेरी है।

कैसे मैं जीता हूँ............

कैसे मैं जीती हूँ............

साथ मरूँगा उसके,

मेरे साथ वो ना जीये।

वादे करके हार गया मैं,

कसमें सारी वो तोड़ दे॥

आओ रानी, सुन लो कहानी।

तेरी-मेरी बात हैं वो सबकी॥

मेरे दिल की सुन ले तू,

पुकार ये सच्ची है।

कैसे मैं जीता हूँ............

कैसे मैं जीती हूँ............

292.गीत-"इस दोस्ती ने"

रतन लाल जाट

इस दोस्ती ने मरते को जीवन दिया है।

इसने खुद अपना बलिदान किया है॥

दोस्ती के खातिर, दिल में चाहत।

वरना कुछ नहीं, दुनिया एक जंगल॥

दोस्ती में जान दी हैं कई दिलों ने।

इस दोस्ती ने मरते को जीवन दिया है......

कोई भूला ना सका, वो दोस्ती है।

कोई छुपा ना सका, वो दोस्ती है॥

इस दोस्ती के वास्ते, स्वर्ग भी छोड़ा है।

एक जन्म का नहीं ये, जन्मों का रिश्ता है॥

यही एक सच है इस दुनिया में।

इस दोस्ती ने मरते को जीवन दिया है......

अपना घर उजाड़ा।

उसकी खुशियों को चाहा॥

कहीं दिल ना लगा।

जब उसको ना देखा॥

हर एक दोस्त के दिल की यही पुकार है।

इस दोस्ती ने मरते को जीवन दिया है......

293.गीत-"यह रिश्ता लगता है प्यारा"

रतन लाल जाट

प्यार से नजरें हटती है नहीं।

प्यार कभी ये मरता है नहीं।।

यह रिश्ता लगता है प्यारा।

दुनिया में कहीं ना है ऐसा।।

कोई एक चीज है ऐसी।

जो कभी ना बंध सकी।।

उसको अपने वश में करना।

चाहकर भी कोई कर ना पाता।।

चाहे कोई कितना ही समझाये?

मगर ये दिल कभी ना किसी की माने।।

साथ रहकर भी उसका राज कोई जाने ना।

दिल के अन्दर दिल के सिवाय कोई देख सके ना।।

प्यार ही जानता है कहानी प्यार की।

दूर रहकर भी मिलाता है प्यार कभी।।

इसमें जीना-मरना साथ है।

जान दो हैं, लेकिन जिगर एक है।।

औरों के खातिर प्यार जीता।

अपना सुख-दुःख भूल जाता।।

294.गीत-"हरकहीं हमको प्यार दिखे"

रतन लाल जाट

हरकहीं हमको प्यार दिखे।

बातें उसकी पल-पल सुनायी दे॥

उसकी हर याद हमको रूलाये।

बिन उसके कुछ भी अच्छा ना लगे॥

प्यार कितना तड़पाये?

किसी को कुछ कह ना पाये॥

प्यार है एक गुड़ की डलिया।

वो ही जाने, जिसने है चख लिया॥

नाम सुना है, देखा है उसको सब कहते हैं।

मगर बदकिस्मत हैं वो लोग,

जिनको प्यार ना मिला है॥

हरकहीं हमको.....................

प्यार के लम्हें कितने हसीन है?

उसके आगे जन्नत हम छोड़ दें॥

रब से प्यारा हमको प्यार लगे।

रब ने सबको वो पैगाम दिया है॥

हरकहीं हमको.....................

295.गीत-"सपने में हम मिलते हैं।"

रतन लाल जाट

सपने में हम मिलते हैं,

सारे दिन मिलकर भी।

मिल नहीं पाते हैं,

एक-दूजे के दिल जी भर कभी॥

इसीलिए तो आते हैं,

हररोज सपने मुझको भी।

समझते हैं दिल की बातें,

जो कह नहीं पाते कहकर भी॥

सपने में हम मिलते हैं,

सारे दिन मिलकर भी...........

तेरे-मेरे मिलन के वास्ते,

कम लगता है जीवन अपना।

सच ही कहते हैं,

सात जन्म हमको है मिलना॥

दिल की बात दिल में,

छुप जाती है अन्दर ही।

सपने में हम मिलते हैं,

सारे दिन मिलकर भी..............

प्यार कभी बदलता नहीं,

वो पुराना हमको लगता नहीं।

प्यार अपने में अजब है,

उसके आगे सब सहज है॥

अमर नाम इसका है,

अमिट ये गजब कहानी।

सपने में हम मिलते हैं,

सारे दिन मिलकर भी..............

296.गीत-"ईश्क से बड़ा कोई नहीं है दुश्मन"

रतन लाल जाट

ईश्क से बड़ा कोई नहीं है दुश्मन।

हर दिल का एक यही है कातिल।।

ईश्क हमको गोली मारे।

फिर भी हम उसको चाहें।।

मन में हम ये सोचें कि-

अब ना कभी मिलना है।

मगर देखो उसका जादू,

दिल हमेशा ही याद करता है।।

उसका हँसना लगे हमको हसीन।

संग उसके कर दे सारा जहां अर्पित।।

ईश्क से बड़ा कोई नहीं है दुश्मन।

हर दिल का एक यही है कातिल।।

जब कभी दिल दुनिया से दूर।

बैठा हो कहीं अकेला गुमसुम।।

उस वक्त देखता वो, ख्वाबों में तुमको।

भले ये तुम ना जानो, पर मालूम दिल को।।

ईश्क में चैन मिले ना एकपल।

बिन उसके जीना है मुश्किल।।

ईश्क से बड़ा कोई नहीं है दुश्मन।

हर दिल का एक यही है कातिल।।

ईश्क ही हँसाता है,

वो ही हमको रूलाता।।

उसके सिवाय कोई ना है,

जो कभी नजर आता॥

दिल में चुभन है उसकी ही।

दिल एक चमन वो मेहरबानी-सी॥

वो ही दिल का है जुनून।

वो ही दिल की है तड़पन॥

ईश्क से बड़ा कोई नहीं है दुश्मन।

हर दिल का एक यही है कातिल॥

297.गीत-"इतने दिन जो सुना था"

रतन लाल जाट

इतने दिन जो सुना था।

आज अपनी आँखों से देखा॥

सुनी थी खूब इसकी कहानी।

लगती है वो और भी प्यारी॥

एक तरफ ऊँची पर्वतमाला है।

तो दूसरी ओर खाई गहरी है॥

और कहीं ना होगा,

ऐसा सुन्दर नजारा।

इतने दिन जो सुना था

हे गिरिवर नगेश!

ऊँचा है तेरा शिखर॥

जो अचरज में डाल दे।

ऐसे अजब हैं मंदिर ये॥

जैसा नाम है सबकुछ वैसा।

इतने दिन जो सुना था

स्वर्ग-सी यह धरती।

देव-रूपी है मानव-बस्ती॥

जहाँ बुराई देखने को ना।

सिर्फ सत्य का बोलबाला॥

लगता है जैसे यहाँ,

सुरलोक आकर बस गया।

इतने दिन जो सुना था

मन करता कि-

यहीं गुजार दूँ मैं जिन्दगी।

अपने सारे गम भूलके

आत्मा पावन हो चमक उठी॥

भूधर! तेरा यह संसार।

धरती से न्यारा है संसार॥

इसके जैसा यहाँ,

मिलना मुश्किल है नजारा।

इतने दिन जो सुना था

298.गीत-"कभी वो कहती है।"

रतन लाल जाट

कभी वो कहती है,

कभी मैं कहता हूँ।

बातें प्यार की करके,

उसके संग मैं भी रोता हूँ॥

कभी दिन, कभी रात।
कभी हम, दोनों साथ॥
वही बातें, वही प्यार
जिसके लिए हम आज
जीते हैं, मरते हैं।
सपने भी देखते हैं॥

रात होते ही मुझको,
वो नजर आने लगती।
तब गुस्सा करके,
प्यार से आँख दिखा डराती॥
उस वक्त मेरे नैनां
बरसाने लगते हैं अश्रु-धारा।
जब दिल से थोड़ा भी
प्यार हमारा कम हो जाता॥
फिर खूलेआम सबके सामने,
वो कहती मुझको बेगाना है।

कभी दिन की धूप में,
तपती है बस अकेली वो।
कभी रात होते ही दिल में,
आग बनकर जलती है वो॥
मार खाकर मैं, प्यार के हाथों।
शाम के वक्त फिर देखता उसको॥
तब लगते मुझको लाल-लाल उसके गाल।

और समझ जाता मैं उसका हालचाल॥

जब कभी नहाती है वो,

तो खुशबू लुभाती है मुझको।

मालूम नहीं,कमल कहाँ खिला है?

कीचड़ तो यहाँ नहीं, फिर कैसे वो उगा है॥

दिनभर रोयी थी वो क्यों?

अब उसका तो मैं हूँ नहीं वो॥

जब काँच में जाकर देखा,

तो आँसू के निशान थे।

उसके गालों पर,

जो अब सूख गये हैं॥

ये प्यारी दुनिया,

बड़ी हसीन लगती है।

पिया को देखकर

और भी हसीन लगती है॥

एकदिन कहती है,

वो बदनसीब मुझे।

तब सारी रात रो-रोके,

याद करता हूँ उसको मैं॥

कभी वो कहती है,

कभी मैं कहता हूँ।

बातें प्यार की करके,

उसके संग मैं भी रोता हूँ॥

299.गीत-"भले हम तुमसे दूर हैं।"

रतन लाल जाट

भले हम तुमसे दूर हैं,

या तुम हमसे दूर है।

मगर दिल में दोनों के

एक-सा दर्द-ए-प्यार है।।

बस, दिन-रात आँखों में,

तुम्हारी एक चाहत है।

ये आँखें ढूँढ़ती है,

हरकहीं वो देखती है।।

भले हम तुमसे दूर हैं

कहने को हम दूर,

मगर दिल अपने एक हैं।

तुम भी जानते कि-

क्या हमारा हाल है?

रातभर तेरी यादें,

देर तक रूलाती हमें।

भले हम तुमसे दूर हैं

जी करता है इसी पल,

आ जाऊँ मैं तोड़ सारे बंधन।

मगर इस जहां में यह

बहुत ही मुश्किल है सनम।।

आँखें बन्दकर देख लेना मुझे,

रात को सपने में हम मिलेंगे।

भले हम तुमसे दूर हैं

दिल को यकीन है,

मरके भी ना जूदा होंगे।

कितने ही दूर रहे तन अपने?

मगर दिल कभी दूर ना हो सके।।

भले हम तुमसे दूर हैं

बस, दिल यही दुआ करता है।

जीवन में तू हमेशा ही खुश रहे।।

तुम्हारे दुःख-दर्द आये,

हमको सताने के वास्ते।

यही अपना एक प्यार है,

रिश्ता बड़ा ही अनमोल है।

भले हम तुमसे दूर हैं

300.गीत-"दुनिया की दास्तां"

रतन लाल जाट

दुनिया की दास्तां, बड़ी अजब है।

हर कोई चाहता, वो खूब जीये।।

वहीं और नजारा, करता है बेचैन हमें।

कोई जिन्दगी से बेचारा, जूझ रहा है।।

हाल ये देखकर,

दिल में मेरे एक चुभन।

देखो, तुम नजर फैलाकर,

इस बगिया में कितने चमन?

जो कोई मुरझाया, तो कोई खिल रहा।

यहाँ कई रंगों का, मौसम प्यारा है।

दुनिया की दास्तां.................

दिल में अपने जल रही होली।

मगर हमको रोशन करनी है दिवाली।।

तड़पकर हम रह जायेंगे।

मगर कभी तड़प देख ना पायेंगे।।

समझो, जरा दिल में क्या दर्द है?

दुनिया की दास्तां.................

कभी हमको गर्मी सताती।

कभी गर्मी हमको लुभाती।।

जाते कहीं हँसते-हँसते।

मगर लौटते वक्त क्यों रोते?

कम होते है इन्सां, ऐसे इस जहां में।

दुनिया की दास्तां.................